

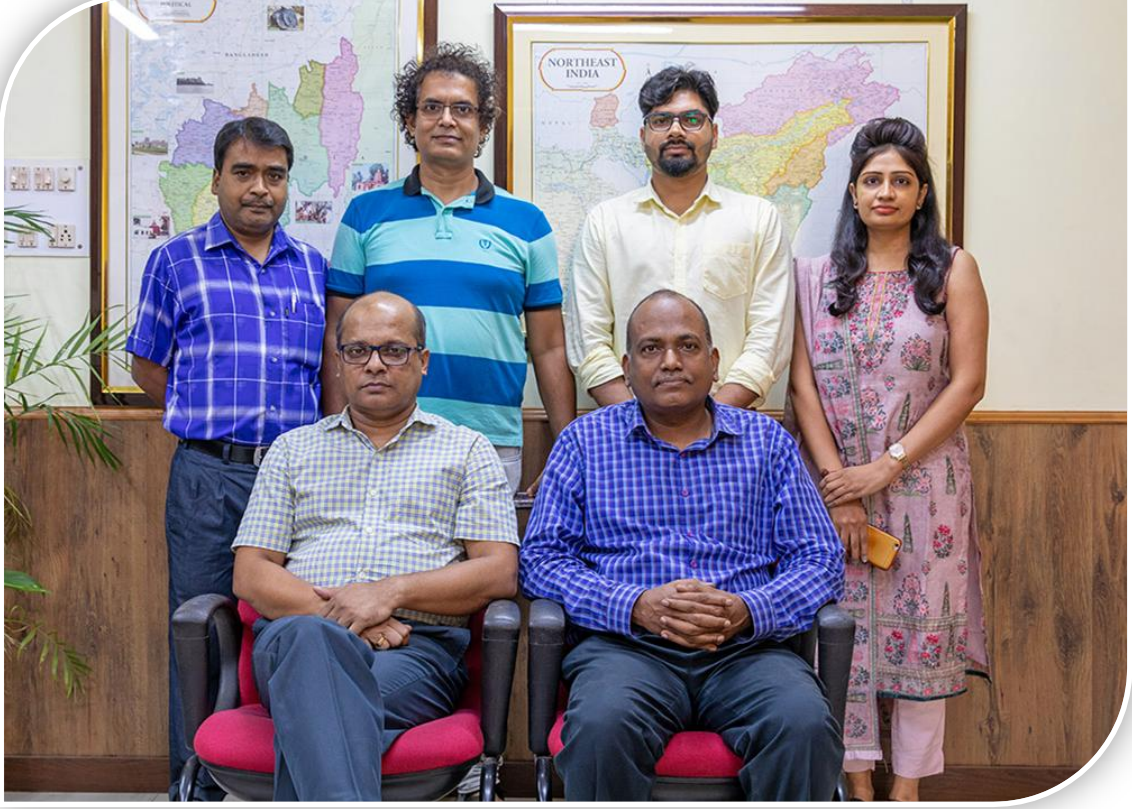
# गोमती

हिन्दी वार्षिक पत्रिका - 2019 अंक - तृतीय



महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा),  
त्रिपुरा, अगरतला

## गोमती परिवार



बाएं से बैठी मुद्रा में: - श्री मनीष कुमार, महालेखाकार महोदय,  
श्री एम नागेश्वर रेड्डी, उपमहालेखाकार (प्रशासन)

खड़ी मुद्रा में: - श्री नृपेंद्र चंद्र बिश्वास (लेखापरीक्षा अधिकारी),  
श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी),

विनोद कुमार सोनी (आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक), सुश्री सोमवती (वरिष्ठ हिंदी अनुवादक)

# गोमती

हिन्दी वार्षिक पत्रिका - 2019

अंक - तृतीय



महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा),

त्रिपुरा, अगरतला



पत्रिका का नाम	: गोमती
वर्ष	: 2019
अंक	: तृतीय
संरक्षक	: श्री मनीष कुमार, महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
प्रकाशन स्थल	: महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा), त्रिपुरा, अगरतला
संपादक मण्डल	: श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री नृपेन्द्र चन्द्र विश्वास, लेखापरीक्षा अधिकारी सुश्री सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री विनोद कुमार सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक
मुख्य पृष्ठ	: छोबीमुरा, त्रिपुरा (सौजन्य : श्री पार्थसारथी चक्रवर्ती)
अंतिम पृष्ठ	: सौजन्य : श्री मनीष कुमार, महालेखाकार
छायांकन	: कुमार मृणाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
मूल्य	: राजभाषा के प्रति निष्ठा

## संदेश



“गोमती” पत्रिका के तृतीय अंक का विमोचन करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। “ग” क्षेत्र में स्थित हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा दिए गये लेख, कविता, कहानियां आदि विधाएं हिंदी भाषा के कार्यान्वयन को प्रतिबिम्बित करने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के प्रति निष्ठा को भी दर्शाता है। स्वामी दयानंद का यह कथन की हिंदी के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है कार्यालयीन पत्रिकाओं के सन्दर्भ में बिलकुल सटीक बैठता है जो पूरे राष्ट्र को जोड़ने में अपना अहम योगदान रखती है।

संविधान के अनुच्छेद 351 के तहत यह हम सबका दायित्व बनता है कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करें और हमारी हिंदी को कामधेनु बनाये।

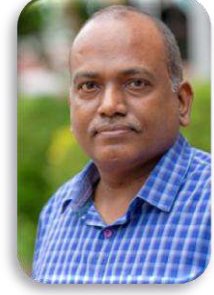
गोमती के तृतीय अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(मनीष कुमार)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा, अगरतला

## संदेश



कार्यालयीन पत्रिका “गोमती” के तृतीय अंक के प्रकाशन पर आप सब को ढेरों बधाईयां। किसी भी देश की प्रगति एवं विकास में वहां की भाषा का अहम् योगदान होता है और भाषा एक ऐसी कड़ी है जो सब जनों को जोड़कर रखती है। हिंदी भी एक ऐसी ही भाषा है जो पूरे भारत को जोड़े हुए है और अन्य भाषाओं की जननी है।

भारतीय होने के नाते हम सब का संवैधानिक दायित्व बनता है कि हम सब हिंदी में काम करें और हिंदी बोलने में गौरव का अनुभव करें एवं अन्य लोगों को भी प्रेरित करें।

गोमती के निरंतर एवं सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को शुभकामनाएं...

एम. नागेश्वर रेड्डी

(एम. नागेश्वर रेड्डी)

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

## संदेश



किसी भी व्यक्ति की पहचान उसकी जुबान से होती है इसी तरह किसी भी देश की पहचान भी उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है एवं विविधता में एकता ही सदियों से इसकी पहचान एवं विशेषता रही है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद का यह कथन कि “जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य पर गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।” इसी प्रकार किसी राष्ट्र की राजभाषा भी वही हो सकती है जिसे अधिकाधिक निवासी समझ सकें और हिंदी इस मापदण्ड पर पूरी तरह से खरी उतरती है।

कार्यालयीन पत्रिकाएं रचनाकारों की प्रतिभा को और निखारती हैं तथा उनके अंदर छुपे हुए रचनाकार को अपने विचार प्रकट करने का एक माध्यम भी प्रदान करती हैं।

“गोमती” पत्रिका के प्रकाशन पर सम्पादक मंडल, सभी कर्मियों एवं रचनाकारों को उनके योगदान के लिए बधाई देता हूँ।

संजय

(संजय कामिनेनी)

उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा)

## संदेश



अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका “गोमती” के तृतीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से न केवल कार्यालय के अधिकारीयों व कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति अभिरुचि बढ़ेगी अपितु यह राजभाषा के प्रचार प्रसार में भी अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी। हिंदी मात्र एक भाषा नहीं है यह हमारी पहचान एवं स्वाभिमान का प्रतीक भी है। हिंदी एक प्राचीन भाषा है, जो विश्व स्तर पर एक जबरदस्त प्रभाव बना रही है। इस अंक के सफल प्रकाशन में अपनी साहित्यिक प्रतिभा दर्शाने वाले सभी लेखको को बधाई और यह आशा करता हूँ की भविष्य में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति बनी रहेगी।

*विश्वास*

(नृपेंद्र चंद बिश्वास)  
लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)



## संपादक की कलम से



हमें 'गोमती' हिंदी पत्रिका के तृतीय अंक को प्रकाशित करने पर गर्व है। भारत की विभिन्न भाषाएं, रहन-सहन, अलंकरण यदि विभिन्न रंगों के फूल हैं तो हिंदी वह धागा है जिसके माध्यम से एक माला बनाई जाती है। हमारी पत्रिका ऐसी ही एक माला है। हमारे कार्यालय में यह देखा जाता है कि भारत के विभिन्न हिस्सों से लोग आते हैं, और अपना कर्तव्य निभाते हैं। दूसरी ओर, दैनिक जीवन की व्यस्तता में, कोई व्यक्ति कविताएँ, तो कोई कहानियाँ लिखता है। कोई निबंध लिखते हैं तो कोई चित्रांकन करते हैं। हमने इस पत्रिका के माध्यम से सभी ज्ञात या अज्ञात लेखकों या कलाकारों को एक छत्र के नीचे लाने की कोशिश की है।

'गोमती' त्रिपुरा की प्रमुख नदी है। जैसा कि गोमती इस पहाड़ी राज्य के लोगों को पानी से पोषित करती है, हमें उम्मीद है कि यह हिंदी पत्रिका भी उसी तरह हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की छुपी हुई कला को सामने लाएगी। इसके अलावा, भारत की राजभाषा हिंदी, चर्चा का एक नियमित माध्यम बन जाएगी।

अंत में, मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने में योगदान दिया और उम्मीद है कि अगले वर्षों में, सभी के सहयोग से, हमारी ये साहित्यिक पत्रिका "गोमती" और भी समृद्ध होती रहेगी।

**"जय हिन्द"**

*U. M. Sarthi*

(पार्थसारथी चक्रबर्ती)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

## पाठकों की कलम से



गोमती पत्रिका के दूसरे अंक को जिन पाठक कार्यालयों ने सराहा है उनमें “कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान जनपथ, जयपुर”, “कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखंड”, “कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), श्रीनगर, “महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II महाराष्ट्र, नागपुर”, “कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान जनपथ, जयपुर”, “कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लेखापरीक्षा भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद” शामिल है। आप सभी पाठकगणों का तहेदिल से आभार एवं धन्यवाद। आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप अपने बहुमूल्य विचारों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराते रहेंगे।

## अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	कागज की कशियाँ	पार्थसारथी चक्रबर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	13
2.	शिक्षा का सदुपयोग	नृपेंद्र चंद्र बिश्वास, लेखापरीक्षा अधिकारी	15
3.	प्रकृति	आशिष गुप्ता, एमटीएस	16
4.	हमारा 'बिहार' - हमारा अभिमान	शांतनु कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	17
5.	मां	सुखेन छाटुई, लेखापरीक्षक	20
6.	फेसबुक-मायाजाल	पंकज कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	21
7.	मेरा मुकाम	राजेन्द्र कुमार मीणा, एमटीएस	22
8.	मेरा सिक्किम वृतांत	विनोद कुमार सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	23
9.	छोटी बेटी की सोच	अमित कुमार, आशुलिपिक	28
10.	समय की कीमत	अजित देबनाथ, एमटीएस	28
11.	प्लास्टिक प्रदूषण	ऋषभ राज, एमटीएस	29
12.	बेटियाँ	सौमेंद्र माइटी, एमटीएस	30
13.	जल संकट	अविनाश भारद्वाज, एमटीएस	31
14.	अनमोल विचार - स्वामी विवेकानंद	सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	33
15.	पहली नौकरी का अनुभव	रोहित कुमार, एमटीएस	34
16.	युवाओं में आध्यात्मिकता की जरूरत	बिश्वजीत देबनाथ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	36
17.	मृत्युभोज अभिशाप	अमित कुमार, आशुलिपिक	37
18.	नेता, चुनाव और जनता	संदीप विश्वकर्मा, लेखापरीक्षा अधिकारी	38
19.	सकारात्मक सोचें: खुश रहें	चंद्रिमा बिश्वास, एमटीएस	39
20.	सब क्यों हैं परेशान?	पुष्पेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक	41
21.	नारी शक्ति एवं महिला शक्तिकरण	आशिष गुप्ता, एमटीएस	42
22.	भारतीय शिक्षा प्रणाली	नवदीप राय, एमटीएस	45
23.	"बचपन की वो बरसात" आज भी याद है।	ऋषभ राज, एमटीएस	46

क्रम संख्या	रचना का नाम	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
24.	दोस्ती	कुमार मृणाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	47
25.	सुकरात के तीन प्रश्न	सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	50
26.	भू-जल	समरजीत बनर्जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	51
27.	आतंकवाद और सर्जिकल स्ट्राइक	विशाल सिंह, एमटीएस	54
28.	जिला बिजनौर	नमित कुमार, आशुलिपिक	57
29.	घर से दूर नौकरी	प्रधान चौधरी, एमटीएस	59
30.	230 रुपये की एक्स्ट्रा बचत	सायक नंदी, एमटीएस	60
31.	कार्यालयीन गतिविधियां		63
32.	वार्षिक कार्यक्रम		64

मुख्य पृष्ठ पर दी गई तस्वीर त्रिपुरा के एक प्रमुख दर्शनीय स्थल छोबीमुरा की है जो गोमती नदी पर अपनी रॉक कार्विंग (चट्टान मूर्तिकारी) के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर शिव, विष्णु, दुर्गा, कार्तिकेय आदि देवी-देवताओं की छवि चट्टानों पर उकेरी गई है।

—\*\*\*—

अंतिम पृष्ठ पर दी गई तस्वीर त्रिपुरा के नीरमहल की है जो रूद्रसागर झील के मध्य में महाराजा बीर बिक्रम किशोर माणिक्य देबबर्मा द्वारा निर्मित करवाया गया था। यह उत्तरपूर्व में अपने तरह का एकमात्र ऐसा दर्शनीय स्थल है जो राजस्थान के जलमहल की तर्ज पर है।

—\*\*\*—

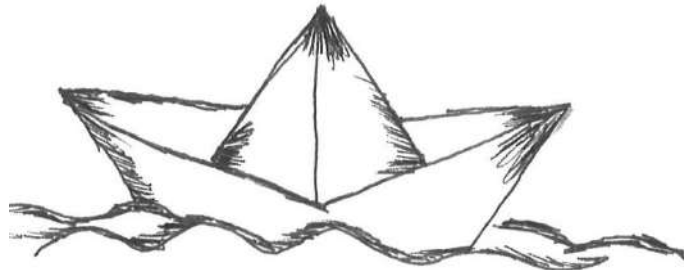
## कागज की कश्तियाँ



पार्थसारथी चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

(श्री पार्थसारथी त्रिपुरा के प्रसिद्ध फोटोग्राफर एवं रचनाकार हैं जो मूलतः बांग्ला में रचना करते हैं।)

हम जैसे-तैसे बड़ी हो रही थी,  
लेकिन आप बड़े हुए ही नहीं,  
आपका बचपन दीर्घ, आपकी किशोरावस्था लम्बी।  
नये दोस्त, नये प्यार की भीड़ में,  
ढल गयी जवानी भी रफ़्तार से।  
खोये हुए बचपन के साथ,  
तुझे भी खो चुकी थी मैं,  
मेरे बचपन की स्वपन भूमि की तरह,  
जिसे मैंने बहुत पहले छोड़ दिया, बहुत दूर  
जिंदगी जीतने की उम्मीद से।  
यहाँ की उबड़ खाबड़ मिट्टी से  
सुखी धूल हवा उड़ा ले जाती है।  
यहाँ का आसमान बादल नहीं दिखाता,  
यहाँ के ठहरने वाले आसमान नहीं देखते,  
फिर भी आजकल आप,  
बहुत याद आने लगे।  
आदेश देते हुए "एक पेपर दो।"



आपके लिए कितने रंगीन कागज,  
सोने की धारियाँ, गोंद की नली  
कितना संजोया होगा, क्या आपको याद है?  
एक पेपर दें -

मुझे आपकी अधीनता पूरी स्वीकार थी।  
फिर भी क्यों बिखर गया, निष्कारण?  
आज भी जब बारिश का सपना देखती हूँ,  
एकीकृत फुरसत में,  
रोज़ाना के अकेलेपन की चुभन में  
आज जब मन आसमान से मिलते हैं  
काले बादलों के जमाव में,  
आज भी जब झमा झम बारिश से -  
बाढ़ आये मेरे मन में।  
क्यों आज भी आप आदेश देते हो -  
“एक पेपर दो?”



क्या आज भी जब बारिश आती है  
अपनी पहाड़ी पर,  
कागज की कश्ती बनाते हो?  
क्या आज भी गीले दोपहर में चले जाते हो  
सात समुन्द्र और तेरह नदियाँ लांघ कर, खूंखार राक्षस से  
राजकुमारी को बचाने?  
राजकुमारी संकटग्रस्त है,  
मेघदूत से खबर भेज रही हूँ,  
बचाकर ले चलिए अपने अंतहीन बचपन में।  
और हर रोज आदेश करें,  
“एक कागज लाओ, कश्ती बनायेंगे।”

—————\*X\*—————





## शिक्षा का सदुपयोग

*नृपेंद्र चंद्र विश्वास, लेखापरीक्षा अधिकारी*

प्राचीन समय में चार दोस्त आश्रम में अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। शिक्षा पूर्ण होने के बाद गुरुदेव ने अपने शिष्यों को घर जाने के आदेश दिए तथा उपदेश दिया कि शिक्षा का सही इस्तेमाल करे। चारों विद्यार्थियों में से एक, शिक्षा में थोड़ा कमजोर था। इसीलिए गुरुदेव ने अन्य तीनों को उसकी सहायता करने के लिए बोला। चारों दोस्त आश्रम से अपने गाँव के लिए जा रहे थे। रास्ते में सबने मिलकर सोचा कि क्यों न एक बार राजदरबार में अपनी शिक्षा का प्रदर्शन कर के नौकरी प्राप्त कर लें। लेकिन कैसे होगा? क्योंकि एक दोस्त तो शिक्षा में कमजोर है। उन्होंने सोचा कि यह हमारे साथ रहेगा तो नौकरी नहीं मिलेगी इसीलिए सोचा कि इसको वापिस आश्रम छोड़ आते हैं। जब वे वापस आश्रम की ओर जा रहे थे उन्होंने देखा कि रास्ते में एक कंकाल पड़ा है। उनमें से एक ने कहा कि इस कंकाल पर अपनी शिक्षा का प्रयोग करके देखते हैं। तीनों में सहमति बन जाती है लेकिन जो शिक्षा में कमजोर था उसने समझाया कि हमें पता नहीं है कि ये कौन सा जानवर है इसीलिए हमें इस पर शिक्षा का प्रयोग नहीं करना चाहिए लेकिन उन तीनों ने उसकी इस बात को नजरअंदाज किया और अपने विचार पर कायम रहे। अतः तीनों दोस्तों ने अपनी शिक्षा का प्रयोग करना शुरू कर दिया। एक ने अपनी शिक्षा का प्रयोग कर के कंकालों को एक साथ जोड़ दिया। दूसरे ने उस कंकाल को आकृति दे दी। आकृति देने के बाद वह जानवर सिंह के जैसा दिखने लगा। तब कमजोर दोस्त ने कहा कि अब हमें आगे शिक्षा का प्रयोग नहीं करना चाहिए अगर कंकाल में जान डाल दी तो यह हमें खा जायेगा लेकिन उन्होंने उसकी बात नहीं मानी। तब कमजोर दोस्त ने कहा कि उसको पेड़ पर चढ़ जाने दो। इसके बाद कंकाल में जान डाल देना। तीनों दोस्तों ने अपनी शिक्षा का प्रयोग कर के कंकाल में जान डाल दी। जानवर में जान डालते ही वह सिंह बन गया और तीनों दोस्तों को पकड़कर एक-एक कर के खा गया।

शिक्षा का सही इस्तेमाल न कर के उन तीनों दोस्तों ने अपना जीवन संकट में डाल लिया और शिक्षा में कमजोर होते हुए भी चौथे दोस्त ने शिक्षा का सही इस्तेमाल किया जिससे उसे कोई संकट नहीं आया। इसीलिए शिक्षा एवं ज्ञान का सही समय एवं सही जगह पर ही इस्तेमाल करना चाहिए।

\*X\*

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।

**महात्मा गांधी**

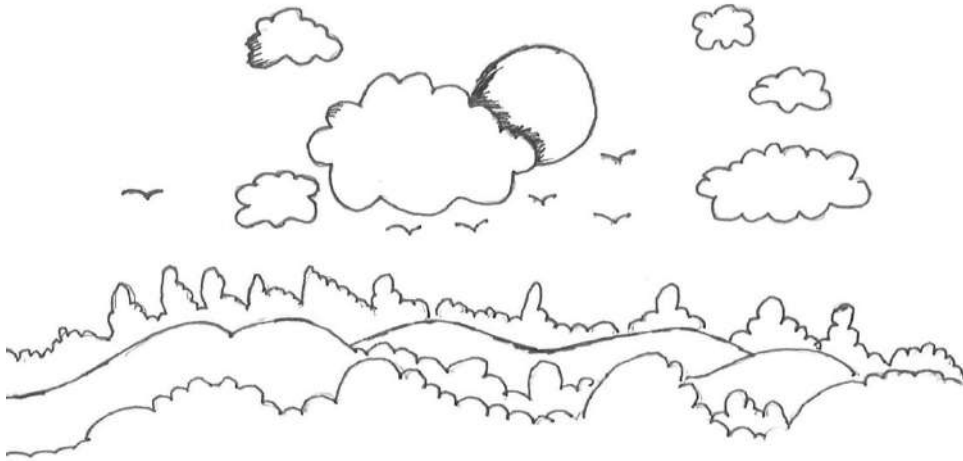
## प्रकृति



आशीष गुप्ता, एमटीएस

ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे,  
ये हवाओं की सरसराहट 'ये पेड़ों पर फुदकती चिड़ियों की चहचाहट।  
ये समुंदर की लहरों का शोर, ये बारिश में नाचते सुंदर मोर, कुछ कहना चाहती है हमसे  
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे,  
ये खूबसूरत चांदनी रात  
ये तारों की झिलमिलाती बरसात  
ये खिले हुए सुंदर रंग बिरंगे फूल  
ये उड़ते हुए धूल  
कुछ कहना चाहती है हमसे  
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे,  
ये नदियों की कलकल, ये मौसम की हलचल, ये पर्वत की चोटियाँ, ये झींगुर की सीटियाँ  
कुछ कहना चाहती है हमसे  
ये प्रकृति शायद कुछ कहना चाहती है हमसे,

—\*X\*—



## हमारा 'बिहार', हमारा अभिमान



शान्तनु कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

'बिहार' और 'बिहारी' शब्द किसी से अपरिचित नहीं हैं और न ही भारत में 'बिहार' से इतर की जनता जिस उपेक्षित दृष्टि से कभी मजाक के तौर पर तो कभी ताना मारने के लिए इस शब्द का प्रयोग करती है। आज जो लोग 'बिहार' की भूमि का अपमान कर रहे हैं, उन्हें मैं इस लेख के माध्यम से बताना चाहता हूँ कि हमारा 'बिहार' क्या है और क्यों हमें हमारे 'बिहार' पर अभिमान है।

'बिहार' वो राज्य है जिसे प्राचीनकाल में मगध के नाम से जाना जाता था और इसकी राजधानी पटना को पाटलिपुत्र के नाम से। 'बिहार' का इतिहास उतना ही पुराना है जितना भारत का। यहाँ मौर्य, गुप्त आदि राजवंशों ने, मुगल शासको ने राज किया। माना जाता है की 'बिहार' शब्द की उत्पत्ति बौद्ध विहारों के शब्द "विहार" से हुई जिसे बाद में 'बिहार' कर दिया गया। 99 हजार 200 वर्ग में किमी. के क्षेत्रफल में विस्तृत 'बिहार', उत्तर में नेपाल, पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश और दक्षिण में झारखण्ड से घिरा हुआ है। 1912 में बंगाल के विभाजन के समय 'बिहार' अस्तित्व में आया। सन् 1935 में ओडिशा और सन् 2000 में झारखण्ड को 'बिहार' से विभाजित कर दिया गया। 'बिहार' वो राज्य है जो भारत के साहित्यिक, ऐतिहासिक, धार्मिक सभी स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है और आज भी 'बिहार' शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक दृष्टि से उतना ही समृद्ध है जितना पहले था।

'बिहार' की साक्षरता पर लोग हमेशा प्रश्न उठाते हैं पर सच्चाई यह है कि यदि आंध्रप्रदेश और केरल से संयुक्त स्तर पर 'बिहार' की तुलना कि जाए तो आज 'बिहार' में



स्नातक प्रतिशत इन दोनों राज्यों से ज्यादा है। आईएएस, आईपीएस की बात की जाये तो आज 'बिहार' में केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश और गुजरात से अधिक संख्या में आईएएस और

आईपीएस निकल रहे हैं। 'बिहार' की विकास दर 14.48 फीसदी है जो यह साबित करती है कि 'बिहार' देश में तेजी से प्रगति करने वालों राज्यों में सर्वोच्च है। आज सर्वाधिक बैंक पीओ बिहार के हैं जो अन्य राज्यों को पछाड़ रहे हैं।

अभियांत्रिकी स्तर पर भी देखे तो जितने आईआईटीयन 'बिहार' से निकल रहे हैं वो अन्य राज्यों से कहीं अधिक है। 'बिहार' आज शैक्षिक स्तर पर केरल के शैक्षिक स्तर को टक्कर दे रहा है बल्कि यह कहना भी अनुचित नहीं होगा की 'बिहार' में साक्षर लोगो की संख्या केरल के लोगो से ज्यादा है। यहाँ नालंदा और विक्रमशिला जैसे पुरातन विश्व विद्यालय हैं जहाँ विश्वामित्र का आश्रम था और यहीं राम लक्ष्मण की प्रारंभिक शिक्षा संपन्न हुई। 'बिहार' के कोचिंग सेंटर "सुपर 30" को अमेरिका की "टाइम मैगजीन" ने सर्वश्रेष्ठ संस्थानों की सूची में शामिल किया है।

आपराधिक स्तर पर बात की जाये तो आज जहाँ अन्य राज्यों में निरंतर क्राइम रिकॉर्ड टूटता दिखाई दे रहा है वहीं 'बिहार' का क्राइम रेट दिल्ली की तुलना में दिल्ली के क्राइम का दसवां हिस्सा है। यहाँ बलात्कार, दहेज-हत्या, साम्प्रदायिक हिंसा जैसे अपराध अन्य राज्यों की अपेक्षा बहुत कम है। यहाँ की सरकार ने पिछले सात वर्षों में नक्सली हिंसा पर काबू पाया है।

अगर कृषि क्षेत्र की बात करें तो 'बिहार' की उत्पादन क्षमता पंजाब से भी ज्यादा है। आज कृषको की आत्महत्या की खबर बहुत आम हो गई है पर 'बिहार' एक ऐसा राज्य है जहाँ कभी कोई किसान इतना मजबूर नहीं होता की उसे आत्महत्या करनी पड़े। यहाँ गंगा, भागमती, कोसी, कमला, गंडक, घाघरा, सोन, पुनपुन, फल्गु, किउल नदियाँ बहती है। 'बिहार' में भाषाओं की भरमार है। अंगिका, भोजपुरी, मगही, मैथिली और वज्जिका ये सब भाषाएँ केवल यही की है।

'बिहार' बुद्ध की तपोभूमि है, यह वो जगह है जहाँ से बुद्ध और जैन धर्म का उदय हुआ। आज़ादी के समय "भारत छोड़ो आन्दोलन" में 'बिहार' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहीं पर चम्पारण का विद्रोह हुआ जो ऐतिहासिक नजरिये से बहुमूल्य घटना है। यहीं पर कवि कोकिल विद्यापति का जन्म हुआ और यहीं पर देश के प्रथम राष्ट्रपति 'राजेंद्र प्रसाद' का जन्म हुआ। भारत रत्न से सम्मानित मशहूर शहनाई-वादक बिस्मिल्लाह खान का जन्म भी 'बिहार' में हुआ था। साथ ही हिंदी साहित्य के महान कवि जैसे रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी इत्यादि का जन्म भी यहीं हुआ था। अगर हम फ़िल्मी जगत की बात करें तो प्रकाश झा, शत्रुघ्न सिन्हा, सोनाक्षी सिन्हा, मनोज वाजपेयी, शेखर सुमन, संजय मिश्रा, स्वरा भास्कर, सुशांत सिंह राजपूत, रतन राजपूत ये सभी 'बिहार' से ही हैं। वैसे तो 'बिहार' के बारे में जितना लिखूँ उतना कम है परन्तु शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए मैं हमारे 'बिहार' का वर्णन एक कविता के माध्यम से करना चाहता हूँ।

हम श्रमनायक हैं भारत के और मेधा के अवतारी हैं, हम सौ पर भारी एक पड़े, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

वेदों के कितने द्वंद रचे, हमने गायत्री छंद रचे,

साहित्य सरित की धारा में कितने ही काव्य प्रबंध रचे।

हम दिनकर, रेणु, बाणभट, विद्यापति और भिखारी हैं, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

सत्ता मद में जब चूर हुई, हम जयप्रकाश बनकर डोले,

सिंहासन खाली करो की जनता आती है दिनकर बोले।

हम सिखों के दशमेश गुरु, बिरसा मुंडा अवतारी हैं, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

शहनाई जिस पर नाज़ करे, बिस्मिलाह खां हम ही तो हैं,

शारदा लोक शैली गायक, सुर की पहचान हम ही तो हैं।

दुनिया पूजे उगता सूरज हम ढलते के भी पुजारी हैं, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

हम सबसे ज्यादा पत्रकार हैं, आईपीएस सबसे ज्यादा और आईएएस सबसे ज्यादा

हम भारत के सबसे ज्यादा सर्वोच्च अधिकारी है, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

मैथिली, अंगिका, भोजपुरी हम लोकगूंज किलकारी हैं, दुनिया पूजे धन की देवी, हम सरस्वती के पुजारी हैं

रावन जिसको छू भी न सका, हम सीता जनक दुलारी हैं, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

पहला-पहला गणतंत्र दिया और अर्थशास्त्र का मन्त्र दिया,

नालंदा से हमने जग को शिक्षा का मंत्र दिया।

गिनती को शून्य दिया हमने, गणनाएं भी बलिहारी है, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

जीते जी हार नहीं मानी, हम वीर कुंवर अभिमानी हैं,

हम खुदीराम इतिहासों में अल्हड़-सी मस्त जवानी हैं

जिसके आगे बौना पहाड़ दशरथ-मांझी धुन्धारी हैं, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

तेजस निर्माण जिसने किया, जग जिसके आगे मौन हुआ,

भारत के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद सा कौन हुआ।

हर रंग के फूल खिले जिसमें, हम ऐसी फुलवारी है, हम धरतीपुत्र बिहारी हैं।

—————\*X\*—————

## मां



सुखेन छाटुई, लेखापरीक्षक

हम एक शब्द है तो वह पूरी भाषा है,  
हम कुंठित है तो वह एक अभिलाषा है.

बस यही मां की परिभाषा है।

हम समन्दर का है तेज तो वह झरनों का निर्मल स्वर है

हम एक शूल है तो वह सहस्र ढाल प्रखर है

हम दुनिया के है अंग, वह उसकी अनुक्रमणिका है

हम पत्थर की है संग, वह कंचन की कर्णिका है

हम शब्द है वह भाषण है हम सरकार है, वह शासन

हम लव-कुश है वह सीता है, हम छंद है वह कविता है,

हम राजा है वह राज है, हम मस्तक है वह ताज है

वही सरस्वती का है उद्गम, है रणचंडी नासा है।

हम एक शब्द है तो वह पूरी भाषा है

बस यही माँ की परिभाषा है।

\*X\*





## फेसबुक - मायाजाल



पंकज कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

माया आजकल बहुत खुश है। मैं मायावती या किसी अन्य माया की नहीं बल्कि उस माया की बात कर रहा हूँ जो सम्पूर्ण समाज पर अपना भ्रम जाल डाले हुए है। एक तरह से देखा जाए तो संसार के चलने के लिए माया का होना कुछ हद तक जरूरी भी है। हमारे समाज के कुछ बुद्धि जीवी इस माया जल को काटने की कोशिश करते हैं, क्योंकि जो सच है वो माया के पर्दे परे है। अपने जाल को कटने से रोकने के लिए माया आदिकल से अनेक तरीके अपनाती आई है। धन-सम्पदा और परिजनों का मोह हमेशा से ही माया के पसंदीदा हथियार रहे हैं। इन्हीं हथियारों के बल पर माया मनुष्य चंचल मन को अपने नियंत्रण में रखती है, उसे स्वतंत्र नहीं होने देती। इंसान को अस्तित्व में आए बहुत लंबा समय बीत गया, लेकिन तब से ही माया को अपने इन्हीं पुराने घीसे-पीटे हथियारों से काम चलाना पड़ रहा है। बहुत समय से उसे कोई नया हथियार नहीं मिला था जो इंसान को भ्रम जाल में कसकर बांध सके।

लेकिन आजकल माया बहुत खुश है। इसकी खुशी का कारण है “मार्क जुकरबर्ग”, जिन्होंने फेसबुक नामक एक आभाषी दुनियां का निर्माण किया। आभाष, भ्रम, स्वप्न, जाल और माया को भला चाहिए क्या? इसलिए माया फेसबुक नामक एक नया हथियार पाकर बहुत खुश है। फेसबुक के जरिए माया ने दुनिया के 2 अरब से अधिक लोगों को अपना निशाना बना रखा है, जिनमें से एक में भी हूँ।



चलिए व्यंग बहुत हुआ अब कुछ गंभीर बात हो जाए। जैसा कि हम जानते हैं अरबो लोग फेसबुक की आभाषी दुनियां में जी रहे हैं। वहीं हंसते हैं, रोते हैं, प्रेम करते हैं, रिश्ते बनाते हैं, बिगाड़ते हैं, अपराध करते हैं

इत्यादी सब इसी आभाषी दुनियां में होता है। यह भी सच है कि फेसबुक लोगों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी मददगार साबित होता है। जिसे कभी किसी ने प्रशंसा के दो

शब्द भी नहीं बोले उसे भी यहां थोक के भाव “लाईक्स” मिल जाते हैं और इससे व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलता है, उसका स्वयं में विश्वास बढ़ता है। यह एक बहुत अच्छी बात है कि हमारा वास्तविक समाज किसी के लिए प्रशंसा के दो शब्द बोलने के मामले में बड़ा कंजूस है लेकिन फेसबुक पर “लाइक” बटन दबाने में हमारे आलसी समाज को जरा भी देर नहीं लगती।

फेसबुक काफी हद तक एक मनोचिकित्सिय दवा के रूप में काम करता है। जब कोई मनोचिकित्सक किसी को अवसाद से बाहर निकलने की दवाई देता है तो वह बताता है कि यह दवा आपके विश्वास को उपर उठाएगी। लेकिन यदि इन्हीं दवाओं को आवश्यकता से अधिक ले लिया जाए तो ये आपके अन्दर अति आत्मविश्वास पैदा कर सकती है जैसा कि सर्वविदित है कि अति हर चीज की बुरी होती है चाहे वह विश्वास ही क्यों न हो। इसी प्रकार यदि इंसान फेसबुक को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाने में अति कर देता है तो यह अच्छी सुविधा क बिमारी में बदल सकती है। यदि आप अपने विवेक को भुलाकर फेसबुक के जाल में फसंगे तो यह सुविधा आपके मन में अनेक भ्रम पैदा कर सकती है। प्रसिद्ध का भ्रम, महान होने का भ्रम, सफल होने का भ्रम, सुंदर होने का भ्रम, हमेशा सही होने का भ्रम आदि। ये सब भ्रम कब आपके मन पर कब्जा कर लेते हैं आपको पता भी नहीं चलता। फेसबुक एक अच्छी सुविधा है। लेकिन इसका प्रयोग सोच-समझकर किया चाहिए। वास्तविक जीवन वास्तविक है। फेसबुक की आभाषी दुनिया आपके जीवन की पूरक तो हो सकती है लेकिन उसका विकल्प नहीं। पूरक बनाने में भी आपको सोचना होगा कि इसे अपने अस्तित्व में कितना हिस्सा देना चाहिए।

—\*X\*—

## मेरा मुक़ाम



राजेन्द्र कुमार मीणा, एमटीएस

पढ़ते तो सभी हैं बस, अफसर बनता वही एक है।  
बड़े मुश्किल सफर में, मेहनत करता वही एक है।  
डगर आसान है पर, डगर पर बने रहना मुश्किल है।  
ताने सुनकर भी, खुद को संभालता वही एक है।

क्या रखा है उस नौकरी में, जिसमें वो रूतबा नहीं।  
कमाता तो वह भी है जो स्कूल कभी जाता नहीं।  
माना की यह सफर जरा, इतना भी आसान नहीं।  
पर तू तो इंसान है, क्या तुझे इतना भी ज्ञान नहीं।

उठ बैठ हो तैयार, तु इस मुक़ाम का पाने के लिए।  
तुझे जरूरत नहीं किसी भी कोचिंग पर जाने के लिए।  
जो बीत चुका उसे भुलकर, एक नयी शुरुआत कर  
क्युं रोते हो इस स्थिति में, जा पढ़ाई दिन-रात कर।



## मेरा सिक्किम वृत्तांत

विनोद कुमार सोनी, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

भ्रमण करना किसे नहीं पसंद। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने संपूर्ण जीवन काल में कहीं न कहीं भ्रमण अवश्य ही किया होगा। हम में से अधिकांश लोग तो प्रातः कालीन भ्रमण करना भी पसंद करते हैं और इससे होने वाले फायदों से भी हम सभी परिचित हैं। खैर, मैं यहां बात प्रातः कालीन भ्रमण की नहीं बल्कि पर्यटन स्थलों के भ्रमण की कर रहा हूं। आप में से भी बहुत से लोगों ने पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया ही होगा और बहुत से अभी भ्रमण करने का विचार बना रहे होंगे। मैं भी भ्रमण करने का शौकिन हूं और मेरे इस शौक को पूरा करने में मेरी वर्तमान (उत्तरपूर्व क्षेत्र - त्रिपुरा) एवं मेरी भूतपूर्व (मध्यप्रदेश - बालाघाट) पदस्थता का खासा महत्व रहा है। मैं, पूर्व में वन-विभाग से जुड़े होने के कारण वहां हरियाली के संपर्क में रहता था और अब जब मेरी पदस्थापना महालेखाकार कार्यालय, अगरतला में हो गई है तब भी हरियाली के संपर्क में ही रहता हूं। वैसे मुझे वन-विभाग में प्रशिक्षण के दौरान तो लगभग संपूर्ण मध्यप्रदेश में घूमने का भी अनुभव मिला है क्योंकि हमें प्रशिक्षण के समय भिन्न-भिन्न स्थानों के वनों को दिखाने ले जाया जाता था और साथ ही वहां पर स्थित पर्यटन स्थल भी घूमने का अवसर मिल जाता था। अगरतला में पदस्थता के बाद, यहां से भी प्रशिक्षण के लिए शिलांग और दिल्ली जाने का मौका मिला और इन दोनों ही जगह घूमकर मैंने अपने भ्रमण के शौक को बनाए रखा है। ऐसे ही मेरे द्वारा किए गए एक भ्रमण का अनुभव मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूं और यह भ्रमण है - भारत के एक छोटे एवं अत्यंत खूबसूरत पर्वतीय राज्य 'सिक्किम' का।

सिक्किम भ्रमण के पीछे एक छोटी-सी रोचक कहानी भी है। घूमने का विचार हम पांच मित्रों - मैं (विनोद), आशिष, सुखेन, पंकज और प्रणव ने मिलकर बनाया था और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारा विचार कभी-भी सिक्किम जाने का था ही नहीं। हम लोग तो नागालैण्ड जाना चाहते थे। दिसम्बर माह में 01 से 10 तारीख तक यहां एक सांस्कृतिक त्योहार का आयोजन होता है जिसे हॉर्नबिल फेस्टिवल के नाम से जाना जाता है और इसे देखने यहां पर लोग देश-विदेश से आते हैं और हम लोगों ने भी यही प्लान किया था। इस फेस्टिवल में जाने के लिए हम सारी तैयारियां कर चुके थे परंतु एक या दो दिन पूर्व ही हमें पता चला कि नागालैण्ड में प्रवेश करने के लिए इनर लाइन परमीट (आईएलपी) की आवश्यकता होती है और यह परमीट नागालैण्ड हाऊस जाकर ही बनवाया जा सकता है इसके

लिए कोई ऑनलाइन सुविधा भी नहीं है। अब हमें यह निर्णय लेना था कि हमें आगे क्या करना है। हमारे सारे टिकट्स हो चुके थे, बस हमारे पास परमीट नहीं था। खैर, जाने का दिन आ ही गया। हमने सोच लिया कि जो भी निर्णय लेंगे वह ट्रेन में ही लेंगे और हम लोग 08 दिसम्बर, 2018 की संध्या में अगरतला रेलवे स्टेशन पहुंच गए। चूंकि अगरतला उस ट्रेन का प्रारंभिक स्टेशन था तो ट्रेन हमें प्लेटफार्म पर लगी हुई मिल गई और हम सभी अपने कोच में सवार हो गए। सबके मन में यही विचार चल रहा था कि आगे क्या करेंगे। ट्रेन गुवाहाटी की ओर रवाना हो गई। नागालैण्ड के लिए हमें दिमापुर रेलवे स्टेशन पर उतरना था परंतु हम लोगों के पास इनर लाइन परमीट नहीं था इसलिए आपसी विचार-विमर्श से हमने निर्णय लिया कि हम अब सीधे गुवाहाटी में ही उतरेंगे, अब नागालैण्ड जाना रद्द। जहां जाने की प्लानिंग हमने एक माह पूर्व की थी हमारा वहां जाना ही रद्द हो चुका था। अगली सुबह हम लोग गुवाहाटी पहुंचे, चूंकि हमारे पास आगे का कोई प्लान नहीं था इसलिए हमने गुवाहाटी में रूकने का फैसला लिया।

गुवाहाटी रेलवे स्टेशन से तीन या चार किमी. दूर प्रणव के एक मित्र का कमरा था हम लोगों ने वहीं रूककर आगे का प्लान तैयार करने का निर्णय लिया और क्योंकि हमारे पास 9 दिसम्बर के पूरे दिन का समय था, हमने गुवाहाटी के कुछ धार्मिक पर्यटन स्थलों के भ्रमण का विचार बनाया। गुवाहाटी भ्रमण के लिए हम करीब 12 बजे तैयार हो गए। टेक्सी रिजर्व कर हम सब मित्र नीलांचल पर्वत की तलहटी पर “कामाख्या मंदिर” के लिए पहुंचे। इस मंदिर की विशेषता यह है कि भारत में स्थित 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ यह है और अपनी वास्तुकला एवं तंत्र-मंत्र सिद्धियों के लिए प्रसिद्ध है।

मंदिर में प्रवेश के लिए बहुत ज्यादा भीड़ थी इसलिए हमने दर्शन करना रद्द कर दिया और बाहरी खूबसूरती का ही आनंद लिया। यहीं पर एक से दो घण्टे व्यतीत करने के बाद हमने अगले धार्मिक स्थल “उमानन्दा टेम्पल” की ओर प्रस्थान किया। यह मंदिर ब्रह्मपुत्र नदी के एक छोटे से टापू पर स्थित है और चारों ओर नदी से घिरा हुआ है। हमें मंदिर तक पहुंचने के लिए नाव के माध्यम से जाना पड़ा। नदी के बीचों-बीच होने के कारण इसकी सौंदर्यता अलग ही निखर कर सामने आ रही थी। यहां पर फोटोग्राफी करते हुए कुछ समय व्यतीत कर हम प्रणव के मित्र के निवास स्थान पर गए। रात के भोजन के समय हमने प्लान किया कि क्यों न सिक्किम और दार्जिलिंग घूमकर आया जाए। इस पर हम पांचों की सहमति बन गई और हमने तुरंत ही न्यू जलपाईगुड़ी (पश्चिम बंगाल) का टिकट्स कर लिया। हमें अपने नागालैण्ड घूमने के प्लान के रद्द होने पर जो हताशा हुई थी वह सिक्किम और दार्जिलिंग के प्लान के बनते ही गायब हो गई और हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार

हुआ और हम अगले दिन 10 दिसम्बर दोगुने उत्साह से अपने अगले गंतव्य की ओर रवाना हुए। न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन से बाहर निकलकर हमने एक टूर्स एंड ट्रेवल्स में जाकर सिक्किम और दार्जिलिंग भ्रमण के पैकेज के बारे में पता किया और उसके मालिक ने हमें दार्जिलिंग न जाकर उत्तरी सिक्किम के पैकेज के फायदे गिनाए। अंततः दार्जिलिंग का प्लान भी रद्द कर हमने गंगटोक और उत्तरी सिक्किम के छः दिनों का पैकेज 60 हजार रुपये में ले लिया। पैकेज में हमें निवास एवं भ्रमण की सुविधा के साथ केवल उत्तरी सिक्किम में भोजन की सुविधा थी, और यहीं से शुरू हुआ हमारे सिक्किम भ्रमण का अद्भुत सफर।

पर्वतीय रास्तों से होते हुए जब हम गंगटोक पहुँचे तब यहां का तापमान एक से दो डिग्री था जोकि अगरतला एवं गुवाहाटी के तापमान से लगभग 20 से 25 डिग्री कम था। होटल पहुंच कर रात्रि भोजन उपरांत विश्राम कर हमने अपनी सारी थकान मिटाई और सुबह घूमने के लिए तैयार हो गए। सिक्किम के मुख्य शहर 'गंगटोक' भ्रमण का समय हमें अपने प्रवास के प्रथम दिन ही मिल गया। गंगटोक एक स्वच्छ शहर है यहां पर सभी नियम कानून कड़ाई से लागू होते हैं और यहां के लोग इनका पालन भी पूरे सम्मान से करते हैं। यह एक धुम्रपान वर्जित शहर भी है और अगर कोई व्यक्ति यहां खुले में धुम्रपान करता पाया गया तो उसके विरुद्ध तुरंत कार्रवाई की जाती है। प्रातः हमें ट्रेवल एजेंट ने गंगटोक के विभिन्न दर्शनीय स्थलों के का भ्रमण कराया जिनमें से कुछ हैं - बनझाकरी जलप्रपात, गणेश टोक, फूलों की प्रदर्शनी, ताशीलिंग, हनुमान टोक आदि। इन सभी स्थानों पर जाकर हमने खूब मनोरंजन किया और फोटोग्राफ्स लिए। शाम को वापस आकर हम गंगटोक की प्रमुख सड़क 'महात्मा गांधी मार्ग' पर घूमने निकल गए। कुछ समय यहां व्यतीत करने के बाद अपने होटल वापस आ गए जहां हमें ट्रेवल एजेंट ने अगले दो दिनों का उत्तरी सिक्किम कार्यक्रम बताया।

प्रातः जल्दी उठकर हमने उत्तरी सिक्किम की ओर प्रस्थान किया। हमें यहां के लाचेन एवं लाचुंग में एक-एक रात रुकना था। उत्तरी सिक्किम में ही विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा स्थित है और हमें यहां कंचनजंघा पर्वत एवं अन्य बर्फिली पर्वत भी देखने को मिलने थे इसलिए यहां जाने के लिए हम काफी उत्सुक थे। लाचेन जाने का रास्ता बहुत ही खतरनाक था, एक ओर खाई तो दूसरी ओर भू-स्खलन से कटी फटी सड़कें। 'कबी' एवं 'फेनसांग' तक सड़क के हालात ऐसे ही थे। फेनसांग के पास एक जलप्रपात मिला। हमारा समूह तस्वीरें खिचवाने यहां उतर गया। फेनसांग से निकलकर हम लाचेन की ओर बढ़ चले। सात बजने के कुछ समय पूर्व हम लगभग 9000 फीट ऊँचाई पर स्थित गांव लाचेन में प्रवेश कर चुके थे। पर हम तो मन ही मन रोमांचित हो रहे थे उस अगली सुबह के इंतजार

में जो शायद हमें उस नीले आकाश के और करीब ले जा सके। लोचेन की वो रात हमने एक छोटे से लॉज में गुजारी। रात्रि भोजन के समय हमारे ट्रेवल एजेंट ने सूचना दी की सुबह 5:30 बजे तक हमें निकल जाना है। 10 बजते ही सब रजाई में घुस लिए। अब इस नई जगह और कंपकपाने वाली ठंड (तापमान -3 डिग्री) में जैसे तैसे नींद पूरी की और सुबह 6 बजे कठिनतम यात्रा पर निकल गए।

**पहला पड़ाव - कालापत्थर पर्वत (ऊँचाई - 18000 फीट) :** हमने यहां जैसे ही कार से बाहर



उतरकर हिम परत पर जैसे ही पैर रखा लगा मानो जान ही निकल गई, शीत लहर तो ऐसी चल रही थी कि खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। इस समय यहां का तापमान -18 डिग्री था। हमने ड्राइवर को कहा गाड़ी वापस ले चलो हम यहां नहीं रह पाएंगे। कुछ नीचे की ओर आकर हमने

धूप में गाड़ी रुकवाकर फोटोस क्लिक किए एवं खूबसरती का आनंद लिया और अगले पड़ाव की ओर चल निकले।

**दूसरा पड़ाव - गुरुडोंगमार झील (ऊँचाई - 17800 फीट) :** यहां पर 12 बजे के बाद जाना



सख्त मना है क्योंकि हवाएं यहां बहुत तीव्र गति से चलती है जिससे छोटे-छोटे पत्थर हवा में उड़ने लगते हैं और हम लोग 11:45 बजे यहां पहुंचे। तब भी हवाएं तीव्र थी और कोई भी पर्यटक यहां मौजूद नहीं था। हमने यहां पर झील की खूबसूरती को निहारा और निकल गए अपने अगले गंतव्य

लाचुंग की ओर।

गुरुडोंगमार झील से लगभग छः घंटे की यात्रा के बाद हम रात में लाचुंग के लॉज पहुंचे। ठंड से परेशान हमलोग अब बर्फ को नहीं देखना चाहते थे। लगने लगा था कि इतनी ठंड में यहां आकर गलती कर दी। खैर, रात्रि भोज उपरांत हमने आराम किया और पुनः प्रातः 6 बजे यूमथंग घाटी की ओर बढ़ चले। यह घाटी लाचुंग से करीब 25 किमी. दूर है। यूमथंग घाटी



का तापमान 3-4 डिग्री था जिससे हमें यहां काफी राहत मिली और यहां तीन से चार घंटे व्यतीत किए। इसी बीच हमने फोटोस क्लिक किए, संगीत चलाकर डांस किया एवं बर्फ से खेले। सर्वाधिक आनंद हमें यहीं मिला। घाटी से वापस आकर हम गंगटोक की ओर रवाना हो गए।

**नाथू-ला दर्रा:** सिक्किम दर्शन के अंतिम पड़ाव में हम गंगटोक से मात्र 54 किमी. पर स्थित भारत चीन सीमा के लिए निकल पड़े। आगे बढ़ते गए और एक से बढ़कर एक दृश्यों का आनंद लेते रहे। ऊँचाई बढ़ती जा रही थी फिर भी सड़क काफी अच्छी थी क्योंकि यह सेना द्वारा संचालित थी। दोनों



ओर बर्फ की मोटी मोटी चादरें और बीच में हम। लगभग 14000 फीट कि ऊँचाई पर यह सीमा स्थित है। आखिरकार हमने एक और अंतर्राष्ट्रीय सीमा देख ही ली। वापसी में हम प्रसिद्ध "हरभजन सिंह" के मंदिर गए और वहां कुछ समय घुमकर 'छांगु झील' की ओर बढ़ चले। झील की सतह पर पास के सटे हुए बर्फिले पर्वत का प्रतिबिंब एक ऐसा दृश्य पैदा कर रहा था मानों किसी महान कलाकार की कृति हो। वहीं कुछ लोग याक कि सवारी का बीमजा ले रहे थे। तापमाप कम होने के बावजूद सभी दर्शनार्थियों में काफी उत्साह था। छांगु लेक में घूमकर हम वापस गंगटोक की ओर प्रस्थान कर गए।

यहां हमारे छः दिनों का पैकेज भी समाप्त हो गया और सिक्किम का भ्रमण भी। हमें अगले दिन सुबह 10 बजे ट्रेवल एजेंट ने न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन छोड़ दिया और वहां से हम ट्रेन के रास्ते होते हुए गुवाहाटी पहुंचे। गुवाहाटी से हवाई यात्रा कर अगरतला पहुंच गए। सिक्किम के भ्रमण की ये खट्टी-मिटी यादें हमारे जहन में हमेशा बसी रहेगी।



\*X\*

## छोटी बेटी की सोच



अमित कुमार, आशुलिपिक

एक छोटी बेटी अपने पिता के साथ जा रही थी, रास्ते में एक पूल पर तेजी से पानी बह रहा था, यह देख पिता ने कहा - बेटी डरों मत, मेरा हाथ पकड़ लो, तो बेटी बोली, नहीं पापा, आप मेरा हाथ पकड़ लो। तब हंसते हुए पिता ने पुछा - बेटी दोनों में क्या अंतर है?

तब बेटी बोली - "पापा मैं अगर आपका हाथ पकड़ लुं और अचानक कुछ हो जाए तो मैं आपका हाथ शायद छोड़ दूंग, लेकिन अगर आप मेरा हाथ पकड़ लें तो मैं जानती हूँ कि चाहे कुछ भी हो जाए, आप मेरा हाथ नहीं छोड़ेंगे।"

—————\*X\*—————

## समय की कीमत



अजित देबनाथ, एमटीएस

समय बहुत कीमती है। समय को हम क्षणिक मान के उसे हम नजर अंदाज कर देते हैं। लेकिन वो नजर अंदाज किया हुआ समय ही जीवन की जरूरत के समय हमें नहीं मिलता, और हम अपने समय को दोष देते रहते हैं। समय एकमुखी है। एक बार वो व्यतीत हो जाए तो कभी-भी हम उसे वापस नहीं पा सकते। दुनिया में जितने भी लोग महान बने हैं सब अपने समय को सही तरह इस्तेमाल करके ही बने हैं। अपने जीवन में भी हम अगर कुछ अच्छे बदलाव लाना चाहते हैं तो हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए, ताकि बाद में हमें पछताना ना पड़े और अपने समय को दोष ना देना पड़े।

—————\*X\*—————



## प्लास्टिक प्रदूषण

ऋषभ राज, एमटीएस

जैसे-जैसे मानव प्रकृति के अनुदानों से लाभान्वित होता गया, उसके लोभ में बढ़ोतरी होती गई। जिस प्रकृति से उसे लाभ हो रहा है, उसका ख्याल रखे बगैर कई नए अमानवीय गतिविधियों से ऐसे आविष्कार किए जिससे प्रकृति को नुकसान होना शुरू हुआ। नतीजा, प्रगति के नाम पर मानव ने प्रकृति में बहुत ज्यादा हस्तक्षेप किया। इन भयंकर आविष्कारों में एक प्लास्टिक को भले ही मानव एक अच्छा आविष्कार क्यों न माने मगर यही प्लास्टिक आज उसकी प्रकृति का सबसे बड़ा शत्रु बन उसे प्रदूषित कर रहा है। जिस प्रकृति ने हमारे पूर्वजों को एक अच्छा वातावरण दिया और आगे भी यह हमारी भावी पीढ़ियों को अच्छा वातावरण देने में तत्पर हैं, उसी प्रकृति को प्लास्टिक प्रदूषण से हम गला घोटने पर क्यों उतारू हैं?

अपनी विविध विशेषताओं के कारण प्लास्टिक आधुनिक युग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पदार्थ बन गया है। टिकाऊपन, मनभावन रंगों में उपलब्धता और विविध आकार-प्रकारों में मिलने के कारण इसका प्रयोग आज जीवन के हर एक क्षेत्र में किया जा रहा है। आज यह हमारे दैनिक उपयोग की वस्तु बन गया है। घर के उपयोगी वस्तुओं से लेकर कृषि, चिकित्सा, भवन निर्माण, विज्ञान, शिक्षा, मनोरंजन, अंतरिक्ष कार्यक्रमों एवं सूचना प्रौद्योगिकी में इसका उपयोग किया जा रहा है। आधुनिक समाज में प्लास्टिक मानव शत्रु के रूप में उभर रहा है। समाज में फैले आतंकवाद से तो छुटकारा पाया जा सकता है लेकिन प्लास्टिक से छुटकारा पाना अत्यंत कठिन है। यह प्लास्टिक निर्मित वस्तुएं प्रकृति में विलय नहीं हो पाती है यानि यह बायोडिग्रेडेबल पदार्थ नहीं है। खेत खलिहान यह जहां भी होगा वहां की उर्वरा शक्ति कमजोर हो जाएगी और इसके नीचे दबे बीज भी अंकुरित नहीं हो पाएंगे। जहाँ-तहाँ कुड़े से भरे पॉलीथीन वातावरण को प्रदूषित करती है। खाने योग्य वस्तुओं के छिलके प्लास्टिक में बंदकर फेंके जाने से पशु इनको पॉलीथीन सहित ग्रहण कर लेते हैं, जो नुकसान देय होता है। यहाँ तक कि उनकी मृत्यु भी हो जाती है।

मानव ने जहाँ भी कदम रखा है वो वहाँ प्रदूषण के रूप में प्लास्टिक छोड़ आया है। यहाँ तक यह हिमालय की वादियों को भी दुषित कर चुका है। यह इतनी मात्रा में बढ़ चुका है कि सरकार भी इसके निवारण के अभियान पर अभियान चला रही है। सैर-सपाटे वाले सभी स्थान इससे ग्रस्त हैं। प्लास्टिक कचरे को ठिकाने लगाने के लिए अब तक तीन उपाय अपनाए जाते रहे हैं। आमतौर पर प्लास्टिक के न सड़ने की प्रवृत्ति को देखते हुए इसे गड्डों में भर दिया जाता है। दूसरे उपाय के रूप में इसे जलाया जाता है, लेकिन यह तरीका बहुत

प्रदूषणकारी है। प्लास्टिक जलाने से आमतौर पर कार्बन-डाई ऑक्साइड गैस जैसी विषाक्त गैसों निकलती हैं। प्लास्टिक के निपटान का तीसरा और सर्वाधिक चर्चित तरीका है पुनः चक्रण। पुनः चक्रण से मतलब प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक की चीजें बनाकर उपयोग में लाना।

निःसंदेह भारत में इस प्रदूषण को समाप्त करने के लिए कुछ कदम उठाए गए हैं जैसे बहुत सारे राज्यों में प्लास्टिक प्रयोग को गैर कानूनी मानना और सरकार व आम जनता में इस प्रदूषण को रोकने के लिए गंभीरता का दिखाई देना। इसके लिए कई राज्यों में अभी भी इसे गैर कानूनी करने के लिए बातें चल रही हैं। हमारे देश में कानूनों की कमी तो है नहीं, कमी है तो सिर्फ उन्हें सख्ती से लागू करने की। सरकार और पर्यावरण संस्थाओं के अलावा हर नागरिक को पर्यावरण के प्रति कुछ खास जिम्मेदारियाँ हैं जिन्हें अगर समझ लिया जाए तो पर्यावरण को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। खुद पर नियंत्रण इस समस्या को काफी हद तक कम कर सकता है अन्यथा एक दिन ऐसा भी आएगा जब पृथ्वी एक सुंदर ग्रह न होकर प्लास्टिक एवं कुड़े का ढेर बनकर रह जाएगी और वही दिन इस पृथ्वी के विनाश का चरण होगा।

—————\*X\*—————

## बेटियां



सोमेन्द्र माइती, एमटीएस

चिड़ियों की झुण्ड सी चहचाहती है बेटियां  
पगडंडियों पर नीले-पीले आँचल उड़ाती है बेटियां  
आँगन की तुलसी बन घर को महकाती है बेटियां  
हंसी ठिठोली कर सबका मन बहलाती है बेटियां  
पायल की रुनझुन-सी गुनगुनाती है बेटियां  
पानी सी निर्मल, स्वच्छ नजर आती है बेटियां  
क्यों देखते है दोयम निगाहों से इन्हें ज़माने वाले,  
किसी भी मकान को घर बनाती है बेटियां

—————\*X\*—————

## जल संकट



अविनाश भारद्वाज, एमटीएस

भारत में जल संकट का मूल कारण पानी की गैरमौजूदगी नहीं बल्कि पानी का दुरुपयोग और कुप्रबंधन है। भू-जल पर अत्यधिक निर्भरता से भू-जल में कमी हुई है परंतु इसे रिचार्ज करने कि सुविधाओं पर जोर नहीं दिया गया। अनियमित मानसून ने भी आग में घी का काम किया है। बढ़ती आबादी की जल की जरूरतों को पूरा करने के लिए जल प्रबंधन की आवश्यकता है, क्योंकि “जल है तो कल है।”

जल प्रबंधन से ही इस संकट से निपटा जा सकेगा। इससे आज और भविष्य के पानी की जरूरतों को पूरा किया जा सकेगा। जल नियमों के तहत योजना बनाना, उनका विकास वितरण और जल संसाधनों का इष्टतम उपयोग से जल संकट को दूर किया जा सकता है।

जल प्रबंधन के लिए 1987, 2002, 20102 राष्ट्रीय जल नीतियां लाई गई परन्तु सभी कुछ खास सफल नहीं रही। हमें अब इन समस्याओं को जन आंदोलन के रूप में शुरू करना होगा। जल संरक्षण के लिए हमें युद्ध स्तर पर काम करना होगा, क्योंकि जल संकट की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है। भारतीय अर्थव्यवस्था का कुछ हिस्सा कृषि पर निर्भर है जो जल के अभाव के कारण नियमित रूप से नहीं हो पा रही है। जल के बिना तो “स्वच्छ भारत” की कल्पना करना भी मुश्किल होगा। जल संरक्षण के लिए हमें खुद छोटे स्तर से शुरुआत कर युद्ध स्तर तक काम करना होगा। जैसे हम अपने घर में ब्रश करते वक्त नल खुला न छोड़ें, नहाने व कपड़े धोने के लिए जितने पानी की जरूरत हो उतना ही उपयोग करें। कुआं, जल कुंड, तालाब, पोखर, झीलें एवं नहरों में जल संरक्षित करें। वर्षा जलसंग्रह, सतही अपवाह जल और भू-जल पूनर्भरण हेतु कई तकनीक प्रचलित है जिसके माध्यम से हम जल संरक्षण कर सकते हैं। जल कुदरत का अहम् संसाधन है जिसका कोई मोल नहीं है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती इसलिए कवि रहीम ने कहा है -



“रहीमन पानी राखिये बिन पानी सब सूना  
पानी गये न उबरै मोती मानुष चून।।”

हमारी पृथ्वी चारों ओर से पानी से घिरी हुई है फिर भी हमें जल संकट जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पृथ्वी पर उपलब्ध जल में 97% जल नमकीन होने के कारण पीने योग्य नहीं है। बचे हुए 3% में से 2% ग्लेशियर के रूप में है अर्थात् शुद्ध रूप से हमारे पास पीने योग्य पानी 1% है।

जल प्रबंधन के अभाव में दुनिया के कई देशों को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। भारत भी इस कतार में खड़ा दिखता है। भारत में जल संकट भयानक स्थिति में पहुंच चुका है। ग्रीष्म ऋतु में भारत के ज्यादातर इलाकों में जल संकट देखने को मिल रहा है। हालात इतने बिगड़ गए हैं कि लोग एक डिब्बे पानी के लिए घंटों कतार में खड़े रहते हैं और जल लाने के लिए कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता है।

ड्रॉट अर्ली वार्निंग सिस्टम की रिपोर्ट के अनुसार भारत का 44% से भी ज्यादा हिस्सा असामान्य सूखे की चपेट में है। जल संकट से प्रभावित इलाकों में तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और तमिलनाडू सबसे आगे हैं। स्वच्छ जल के न होने से हर साल दो लाख लोगों की मौत हो जाती है, 2030 तक जल की मांग आपूर्ति से दुगुनी हो जाएगी। 21 महानगरों में 2020 तक भू-जल का स्तर बेहद नीचे चला जाएगा। 2030 तक 40% से अधिक आबादी पीने के पानी की समस्या को झेलेगी। लेकिन ये समस्या कैसे अपनी जड़ों को हमारे देश में जमा रही है और कैसे हम इन समस्याओं से निकल पाएंगे?

वर्षा का जल संग्रहित करने के लिए टैंक, चेक डैम, स्टॉप डैम की व्यवस्था करें। भू-जल पूनर्भरण के लिए गड्ढे खोदें, कुएं खोदें, हैंडपम्प, नलकूप जैसी संरचनाओं का उपयोग करें तथा वर्षा जल हार्वेस्टिंग सिस्टम द्वारा छत पर एकत्रित जल का संचयन करें। नदियों का जोड़ा जाना एक प्रभावी तरीका है जिसके माध्यम से जल संचयित किया जा सकता है। इन सब प्रयासों के द्वारा किसानों की सिंचाई के लिए ड्रिप और स्प्रींकल प्रणालियों का इस्तेमाल सिखाना चाहिए जिससे वह कम जल में भी कृषि करने की तकनीक सीख सकें। जल प्रबंधन के लिए रिड्यूज़, रियूज़, रिसाइकल को बढ़ावा देना चाहिए। हम सब मिलकर प्रयास करें तो हम सब इस समस्या से निजात पा सकते हैं और सभी के लिए जल को उपलब्ध करा सकते हैं क्योंकि -

“जल है तो जीवन है, जीवन है तो पर्यावरण है,  
पर्यावरण से धरती और धरती से हम सब हैं।”

—\*X\*—

**राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।**

**अवनींद्रकुमार विद्यालंकार**





## अनमोल विचार - स्वामी विवेकानंद



सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

- 1 उठो, जागो और तब तक नहीं रुको, जब तक की लक्ष्य न प्राप्त हो जाये।
- 2 उठों मेरे शेरों, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वच्छन्द जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तत्व नही हो, न ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है, तुम तत्व के सेवक नही हों।
- 3 किसी की निंदा न करें। अगर आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते है, तो जरूर बढ़ाये। अगर नहीं बढ़ा सकते तो हाथ जोड़ीए, अपने भाइयों को आशीर्वाद दीजिए और उन्हें उनके मार्ग पर जाने दीजिए।
- 4 अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करें, तो इसका कुछ मूल्य है अन्यथा ये सिर्फ और सिर्फ बुराई का एक साधन है जिससे जल्दी छुटकारा मिल जाये उतना बेहतर है।
- 5 जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।
- 6 सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।
- 7 विश्व एक व्यायामशाला है, जहाँ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।
- 8 उस व्यक्ति ने अमरत्व को प्राप्त कर लिया है, जो किसी सांसारिक वस्तु से व्याकुल नहीं होता।
- 9 एक शब्द में यह आदर्श है की "तुम परमात्मा हो।"
- 10 बाहरी स्वभाव केवल अंदरूनी स्वभाव का बड़ा रूप है।

—\*X\*—

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

भारतेंदु हरिश्चंद्र



## पहली नौकरी का अनुभव



रोहित कुमार, एमटीएस

नमस्कार दोस्तों, मैं गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ। मेरा जन्म और पढ़ाई लिखाई सब यहीं पर हुई। मैं कभी घर से दूर रहा ही नहीं हूँ क्योंकि स्कूल, कॉलेज सभी घर के पास ही थे तो बाहर रहने की आवश्यकता ही नहीं हुई। खैर, मैं अपने अनुभव पर आता हूँ। स्नातक करने के बाद मैंने सरकारी नौकरी की तैयारी शुरू की। तैयारी पूरी करने के बाद मैंने अलग-अलग बैंकों की और कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) की परीक्षा दी। महादेव की कृपा से आखिरकार मुझे मेरी मेहनत का फल मिला और मेरा चयन कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) में हो गया।

एक शाम मैं किसी शादी में जा रहा था कि तभी मेरे दोस्त ने बताया कि परीक्षा का परिणाम आ गया है। मैंने उत्सुकतावश रास्ते में ही गाड़ी किनारे लगाकर अपना परिणाम देखा और पाया कि मैंने अंतिम चरण की परीक्षा को भी पास कर लिया है और मेरा चयन हो गया है। स्वभाविक रूप से मैं बहुत ही खुश हुआ क्योंकि यह मेरे जीवन की पहली नौकरी जो कि सरकारी नौकरी थी। मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया। परिवार, रिश्तेदार, दोस्त सभी बड़े खुश हुए। परन्तु जब मैंने घर आने के बाद परीक्षा का परिणाम फिर देखा तो पाया कि मेरा चयन तो हुआ है परन्तु बहुत दूर के राज्य में हुआ था जिसका नाम है "त्रिपुरा", जो मेरे राज्य से लगभग 2400 किमी दूर भारत के उत्तर-पूर्व में है।

मैं और मेरे परिवार के लोग थोड़ा चिंतित महसूस करने लगे क्योंकि जैसा कि मैंने बताया मैं कभी-भी बाहर नहीं रहा हूँ इसीलिए मेरे मन में भी तरह तरह के विचार आने लगे कि इतनी दूर जाकर कैसे अकेला रहूँगा क्योंकि हर राज्य की अलग-अलग भाषा और संस्कृति होती है। मैं इंटरनेट पर उस राज्य के बारे में जानकारी एकत्रित करने लगा तो पता लगा वहां के लोग बंगाली और जनजातीय भाषा बोलते हैं किंतु मैं सिर्फ हिंदी और अंग्रेजी बोल सकता था। मेरे दोस्त बताते थे कि वह राज्य सुरक्षित नहीं है, नक्सली हमले आए दिन होते ही रहते हैं। यह धारणा बनी हुई थी लोगों की इस राज्य में जोकि व्याकुल करने वाली थी। परन्तु मैंने सोचा अब जो होगा देखा जाएगा, वहां भी तो इंसान ही रहते हैं। यह सोच मैंने वहां जाने का फैसला लिया। मेरे पिताजी थोड़ा चिंतित थे इसलिए उन्होंने फैसला किया कि वह भी मेरे साथ चलेंगे और मेरे लिए वहां पर जो व्यवस्था हो सकेगी करके आएंगे। उनके इस फैसले से मैं थोड़ा बेहतर महसूस कर रहा था। हमने सभी जरूरी समान लिया और रेलगाड़ी से यात्रा आरम्भ की।

रेलगाड़ी में ही मुझे एक भाई समान मित्र मिले जोकि भारतीय सेना में थे और त्रिपुरा के रहने वाले थे। मैंने और पिताजी ने उनसे उनके राज्य के बारे में बहुत-सी जानकारी ली। एक-एक करके मेरी हर समस्या का हल जैसे कि मानो मुझे मिलता जा रहा था। उन्होंने बताया कि जो कुछ भी तुमने इस राज्य के बारे में सुना है और जो कुछ भी लोगों की इसके प्रति धारणा है एकदम गलत है। त्रिपुरा एक खूबसूरत, हरा-भरा और सुरक्षित राज्य है। उन्होंने बताया कि यह सही है कि ज्यादातर लोग बंगाली बोलते हैं परंतु हिंदी भी समझते हैं और बोल भी लेते हैं, और मेरी यह समस्या भी दूर हो गयी। अगरतला (त्रिपुरा) रेलवे स्टेशन पहुँचने के बाद उन्होंने हमें कार्यालय पहुँचाया और अपना मोबाइल नम्बर भी दिया और कहा कुछ भी परेशानी हो फोन करना। वह मित्र स्वरूप ईश्वर थे मेरे लिए।

नवम्बर, 2018 में कार्यालय में पदभार ग्रहण करने के बाद अनुभव हुआ कि यहां के लोग बहुत ही अच्छे और मददगार हैं। और बहुत सारे लोग उत्तर भारत से भी हैं, मेरा हौंसला थोड़ा और बढ़ गया। कुछ दिन बाद बहुत से और लोगों ने भी ज्वाइन किया जिनमें से बहुत से लोग मेरे राज्य या उसके आस-पास के थे, यह देख मुझे अच्छा लगा और मेरे पिताजी हम सबसे मिलकर तथा हमारे रहने की व्यवस्था कर वापस लौट गए।

दिन बीतते गए और मैं यहां के वातावरण में घुल-मिल गया। नये दोस्त बने जोकि अलग-अलग राज्यों से थे जिससे और अच्छा लगता था। परन्तु मेरी माताजी को भी मेरी चिंता होती थी इसलिए कुछ दिन बाद मेरे माता-पिता मेरे पास घूमने और यह सुनिश्चित करने आए कि मैं यहाँ सकुशल और ठीक परिस्थितियों में हूँ। मेरे यहां के दोस्तों से मिलने के बाद मेरे माता-पिता काफी संतोषजनक लग रहे थे। मैं माता-पिता के साथ त्रिपुरा के धार्मिक तथा पर्यटन स्थल देखने गया। हमने त्रिपुरा के संग्रहालय में इस राज्य से जुड़ी विभिन्न चीजें देखीं जिससे हमें यहाँ की परंपरा और संस्कृति का अनोखा अनुभव हुआ। मुझे और मेरे दोस्तों को आशीर्वाद देने के पश्चात् वे दोनों घर लौट गए।

स्वभाविक है कि मुझे अपने राज्य, परिवार, दोस्तों की याद आती है परंतु विज्ञान के इस दौर में अब कुछ भी दूर प्रतीत नहीं होता। जब चाहो जिससे चाहो ऑडियो या विडियो कॉल कर सकते हैं जिससे अपनों की कमी का ज्यादा अहसास नहीं होता। और अब जब यहां भी नए दोस्त बन गए हैं तो हम लोग खूब मौज-मस्ती करते हैं, घूमने जाते हैं, सिनेमा देखने जाते हैं और जब किसी का जन्मदिन आता है तो खूब हर्षोल्लास से मनाते हैं क्योंकि ये दोस्ती ही तो है जो हमें विषम परिस्थितियों में जीना सिखाती है। इन सभी के बीच हम पढ़ाई का भी संतुलन बनाकर रखे हुए हैं ताकि हम सभी अपने-अपने सपनों को साकार कर सकें एवं अपने भविष्य को और सुनहरा बना सकें क्योंकि यह तो बस एक शुरुआत है।

—————\*X\*—————

## युवाओं में आध्यात्मिकता की जरूरत



बिश्वजीत देबनाथ, वरीष्ठ लेखापरीक्षक

युवा समाज और आध्यात्मिकता - ये वाक्यांश आज के समय में कुछ तालमेल नहीं खाता, लेकिन क्यों? "आध्यात्मिकता" में ऐसा क्या है जो युवा समाज इसके प्रति आकर्षित नहीं हो पाता। हमारे अंतर्मन या हमारी सोच में यही बैठ गया है कि जब हम लोग बुजुर्ग हो जाएंगे तब कुछ ईश्वर का नाम करेंगे। लेकिन बुजुर्ग होकर ही क्यों? पहले क्यों नहीं कर सकते? क्या कोई बुरी चीज है या अच्छी चीज है जो युवा लोग अपने कुछ अवगुण के कारण धारण नहीं कर पाएंगे? हम शायद ऐसे सोचते नहीं। लेकिन अगर ईश्वर की बात है तो बुरा हो नहीं सकता। क्योंकि हम सब ईश्वर को पवित्रता का, शांति का, प्रेम का, ज्ञान का, सुख का, आनंद का, शक्ति का सागर मानते हैं। फिर इतने गुणों से भरपूर इतने अच्छे, प्यारे प्रभु की बात हम क्यों सुनना, चिंतन करना नहीं चाहते हैं? क्यों बाद में करने के लिए छोड़ रखा है? क्या कारण हो सकता है? थोड़ा कुछ विचार करें... विचार चाहे एक मिनट या एक घंटे या तो चाहे एक दिन ओर एक सप्ताह भी कर सकते हैं। देखिये आपके मन से क्या उत्तर निकलता है। उसके बाद छोटा सा अनुभव जो बाद में लिखा गया उस पर ध्यान दें। शायद कुछ अनुभव मिले, कुछ दिशा मिले...

"आध्यात्मिकता" का मतलब जीवन सिर्फ अच्छे से ही नहीं बल्कि बहुत बहुत अच्छे से जीने की कला के मार्ग का नाम है। लेकिन शायद हमारा आध्यात्मिकता के प्रति जो दृष्टिकोण हो चुका है उसको थोड़ा परिवर्तित करने की आवश्यकता है। जैसे हम सोचते हैं आध्यात्मिकता में कुछ खोना, कुछ छोड़ना पड़ता है, जीवन में कोई स्वाद आनंद नहीं रहता, जीवन नीरस बन जाता, कुछ नियम से बंध जाता है, कुछ मंत्र पाठ करना पड़ता है, अच्छी तरह से जिंदगी जीने का मजा नहीं ले सकते, आध्यात्मिकता के प्रति हमारा युवा समाज ऐसे कई सारे विचार लेकर बैठा हुआ है। शायद इसीलिए आध्यात्मिकता का जो अमृत रस है इसको पी नहीं पा रहे हैं। अगर कोई अच्छा इंसान मिले तो उसके दिखाये मार्ग पर चलने के लिए हम तैयार हो जाते। और ईश्वर तो सबसे अच्छा है तो क्यों उनके दिखाये मार्ग पर चलने के लिए खुद को तैयार नहीं बना रहे हैं? हम सब जिंदगी में शांति, खुशी, प्रतिष्ठा पाने के लिए ही सब कुछ कर रहे हैं लेकिन शायद सब पूरा नहीं मिल रहा, धीरे-धीरे हमारा टेंशन, अवसाद, शरीर की बीमारी बढ़ती चली जा रहा है इसीलिए अगर जिंदगी को परिवर्तित करने,

समृद्धशाली बनाने की शुभ और दृढ़ इच्छा है तो “केवल परमपिता परमात्मा को अपना गुरु मानकर सच्चे दिल से अपने अच्छे गुण को खुद की शक्ति मानकर जिंदगी में आध्यात्मिकता को अपनाकर देखो। आध्यात्मिकता जीवन को खुशहाली से भर देगी, खुद को शक्तिशाली बना देगी, जिंदगी के हर क्षेत्र में सफलता, समृद्धि ला देगी, आध्यात्मिकता तो जीवन को फूल समान बना देगी। इसीलिए आध्यात्मिकता की शक्ति को प्रयोग करना सीखो तो जिंदगी आनंद से भर जाएगी। आप जो सच्चे दिल से मांग रहे हैं वो जरूर मिल जाएगा। ये सब तब ही संभव होगा जब आध्यात्मिकता के प्रति गलत विश्वास प्रणाली को छोड़ केवल परमपिता परमात्मा के प्रति मन में विश्वास रखकर सच्चे दिल से नया प्रयास करेंगे। बहुत-बहुत शुभकामनाएं सबके प्रति।

—————\*X\*—————

## मृत्युभोज अभिशाप



*अमित कुमार, आशुलिपिक*

जिस आंगन में पुत्र शोक से  
बिलख रही माता,  
वहां पहुँचकर स्वाद जीभ का तुमको कैसे भाता,  
पति के चिर वियोग में व्याकुल  
युवती विधवा रोती,  
बड़े चाव से पंगत खाते तुम्हे पीर नहीं होती,  
मरने वालों के प्रति अपना सद व्यवहार निभाओ  
धर्म यही कहता है बंधुओं मृत्युभोज मत खाओ  
चला गया संसार छोड़कर  
जिसका पालन हारा  
पड़ा चेतनाहीन जहां पर वज्रपात दे मारा  
खुद भूखे रहकर भी परिजन  
तेरहवीं खिलाते,  
अंधी परंपरा के पीछे जीते जी मर जाते  
इस कुरीति के उन्मुलन का साहस करके दिखलाओ,  
धर्म यही कहता है बंधुओं मृत्यु भोज मत खाओ।

—————\*X\*—————

## नेता, चुनाव और जनता



संदीप विश्वकर्मा, लेखापरीक्षा अधिकारी

मौसम देख चुनाव का, अब सभी हो रहे पागल,  
नेता जी भी निकल पड़े है, अपने घर से बाहर।

कहीं खिला है कमल अपार, कहीं है हसुआ-बाली,  
और नेता जी सुन रहे है भरी सभा में गाली।

किया होता जो पांच साल जनता के लिए काम,  
क्यों होता भरी सभा में बेइज्जत सरेआम।

पर नेता तो ऐसे ही होते है और यही है उनका काम,  
अगली बार भी वही करेंगे, भले हो बेइज्जती सरेआम।

वादे करते लंबे-लंबे, जितनी लम्बी उनकी ज़बान,  
पुरे न होते तो कहते, ये तो जुम्बले थी मेरी जान।

जनता भी अब क्या करती, बस देती बटन दबा,  
बहुतों को है नही पता है इसका मतलब क्या?

लम्बे वादों के चक्कर में, बस ऐसे ही फंस जाती,  
पांच साल के लिए अपनी गर्दन नेता को दे जाती।

नेता जी अब धीरे-धीरे गर्दन पर देते रहे चाप,  
न मरने देते, न जीने देते, करते जनता का सत्यानाश।

पांचवे साल जनता को कुछ लॉली पॉप थमाते,  
और चार साल के अन्याय को वो इस तरह दबाते।

याददाश्त वो चार साल की, अब जनता जाती भूल,  
अब खैरातों की चादर चढ़ती देकर उसमे कुछ फूल।

मौसम देख चुनाव का अब सभी हो रहे पागल,  
नेता जी भी निकल पड़े है, अपने घर से बाहर।

\*X\*

हिन्दी का पौधा दक्षिणवालों ने

त्याग से सींचा है।

शंकरराव कप्पीकेरी

## सकारात्मक सोचें: खुश रहें



चंद्रिमा बिश्वास, एमटीएस

क्या आपने कभी अपने विचारों की शक्ति को समझा है? यदि नहीं, तो आप संभवतः 90 प्रतिशत खो रहे हैं जो आप अपने जीवन में प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन आप चिंता ना करे क्योंकि आप अकेले नहीं हैं, हमारे समाज में, दुर्भाग्य से, मानव के अधिकांश विचार अक्सर कल्पना और अपव्यय के स्तर पर आरोपित हो जाते हैं और शायद इस कारण से हम में केवल एक छोटा प्रतिशत वास्तव में अपने जीवन में खुश और संतुष्ट रह पाते हैं। विचार बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनमें हमारी खुशी पैदा करने की शक्ति है।

हाँ, यह सच है की हमारी खुशी हमारे अपने विचारों से आती है और परिणामस्वरूप, हमारे अपने विचारों का चयन करना बहुत महत्वपूर्ण है। सकारात्मक सोच खुशी पैदा कर सकती है जबकि नकारात्मक सोच हमें दुखी बनाती है। लेकिन हमारे विचार हमारे जीवन और हमारी खुशी को कैसे बना सकते हैं? इसका उत्तर बहुत ही सरल ही है - हमारे विचार हमारी भावनाएँ पैदा करते हैं और हमारी भावनाएँ हमारे मन की स्थिति बनाती हैं। जब घटनाएँ



घटती है, हम उस विशेष क्षण में मन की स्थिति के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं। वास्तव में, जीवन में हमारा व्यवहार उस स्थिति का परिणाम है जो हम भुगत रहे। हमारा जीवन हमारी भावनाओं का परिणाम है, हम मन की स्थितियों पर प्रतिक्रिया करते हैं, यदि हम क्रोधित होते हैं और कुछ होता है, तो हम एक निश्चित तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं, लेकिन यदि हम खुश होते हैं तो अलग तरीके से प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इसीलिए यदि अधिकांश समय हम

कुछ नकारात्मक सोचते हैं, तो हम एक नकारात्मक भावना और, एक नकारात्मक स्थिति पैदा करते हैं। बेशक विपरीत भी सच है यदि हम सकारात्मक विचारों के साथ अधिक समय बिताते हैं तो हम अधिक सकारात्मक भावनाओं का निर्माण करते हैं। इसीलिए हमारे पास यह फैसला करने की शक्ति है क्या हम खुश रहना चाहते हैं, बस अपने विचारों को चुनना है। यह एक कठिन काम लग सकता है, लेकिन यह बहुत सरल।

सबसे पहले हमें सकारात्मक सोच के महत्व को स्वीकार करना और मानना होगा, एक बार जब हम इसे पूरी तरह से स्वीकार कर लेते हैं और समझ जाते हैं, तो हमें सकारात्मक निर्णय लेने की आवश्यकता है। हमारे मुख्य नकारात्मक विचारों को पहचानने और उनके स्रोतों की खोज करें। यह कुछ ऐसा है जो हमारे नकारात्मक विचारों को शुरू करता है, हम कुछ सोचते हैं और फिर हम नकारात्मक होने लगते हैं। हमें अपने दिमागों पर सवाल उठाने की जरूरत है, उस सवाल पर सवाल करें जिसके कारण हम नकारात्मक सोचने लगे हैं। अगर हम किसी चीज के बारे में निश्चित हैं, तो हम उस पर सवाल नहीं उठाते हैं, जब हम सवाल करना शुरू करते हैं, तो इसका मतलब है की हम उस बारे में इतने सुनिश्चित नहीं हैं।

जैसा की हम जानते हैं, एक विचार को आकर्षित करता है यह एक श्रृंखला की तरह है, एक सकारात्मक विचार एक सकारात्मक सोच को आकर्षित करता है, और एक नकारात्मक विचार एक नकारात्मक विचार को आकर्षित करता है। एक बार जब हम अपने विचारों को नियंत्रित करना सिख लेते हैं और सकारात्मक सुनना शुरू करते हैं तो हम अपने दिमाग के नियंत्रक बन सकते हैं। यदि हम मन के नियंत्रक हो सकते हैं, तो हम अपने जीवन को नियंत्रण कर सकते हैं।

ध्यान रखें की नकारात्मक से सकारात्मक सोच में बदलना, जाहिर है, यह एक व्यक्ति पर निर्भर करता है, समय लग सकता है। कभी-कभी पुरानी और बुरी आदत पर हम वापिस भी जा सकते हैं, यह बहुत सामान्य है लेकिन चिंता न करें और अपने आप पर कठोर मत बनें। अपने आप पर भरोसा रखें की ये आप कर सकते हैं और अपनी अंतिम इच्छा पर अधिक ध्यान केंद्रित करें: हमें खुश रहना है।

जब आप जागते हैं, तो खुद को याद दिलाएं की आप सकारात्मक और खुश व्यक्ति बनना चाहते हैं। नकारात्मक लोगों से बचें। अपने आप को सकारात्मक लोगों से घेरे रखें। नकारात्मक विचारों को पहचानें और बदलें। हमेशा प्रेरणादायक और सकारात्मक सामग्री के साथ जुड़े रहें। सकारात्मक सोच का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह हमारे जीवन में अधिक खुशी लाती है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। शोधकर्ताओं ने पाया की हमारे दिमाग का हमारे शरीर पर और विशेष रूप से हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली पर एक शक्तिशाली प्रभाव हो सकता है। यह आपको लक्ष्य हासिल करने और सफलता पाने में मदद करता है। यह अवसाद और मन की पीड़ा को कम करता है।

—————\*X\*—————



## सब क्यों हैं परेशान?



पुष्पेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी प्रचालक

गरीब तो परेशान,  
अमीर तो भी परेशान।  
निर्बल तो परेशान,  
सबल तो भी परेशान।  
कुरूप तो परेशान,  
सुरूप तो भी परेशान।  
मूर्ख तो परेशान,  
विद्वान तो भी परेशान।  
विद्यार्थी तो परेशान,  
नौकरीशुदा तो भी परेशान।  
सिंगल तो परेशान,  
कपल तो भी परेशान।  
परेशान करना और होना ही,  
क्योंकि मनुष्य का काम।  
फिलहाल मनुष्य ही,  
परेशानी का दूसरा नाम।  
बिना समझदारी इसका,  
न होगा कभी निदान।



\*X\*

ना जाने ये कैसा अंदाज-ए-बयां है,  
परेशानी पूरी बताना और  
वजह अधूरी...

## नारी शक्ति एवं महिला सशक्तिकरण



आशिष गुप्ता, एसटीएस

“एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहाँ की महिलाओं से सशक्त बनता है, वह माँ, बहन और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन पोषण करती है और तब जाकर एक सशक्त महिला, एक सशक्त समाज और एक सशक्त राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाती है।”

बावजूद इसके समाज में आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो महिलाओं को अबला नारी कहते हैं और मानसिक व शारीरिक रूप से उसका दोहन करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते हैं। प्रसिद्ध लेखिका “तस्लीमा नसरीन” ने लिखा है की “वास्तव में स्त्रियाँ जन्म से अबला नहीं होती, उन्हें अबला बनाया जाता है।” पेशे से एक डॉक्टर तसलीमा ने उदारहण के रूप में इस तथ्य की व्याख्या की है - “जन्म के समय एक “स्त्री शिशु” की जीवन शक्ति एक “पुरुष शिशु” की अपेक्षा अधिक प्रबल होती है; लेकिन समाज अपनी परम्पराओं और रीति-रिवाजों एवं जीवन मूल्यों के द्वारा महिला को ‘सबला’ से ‘अबला’ बनाता है।”

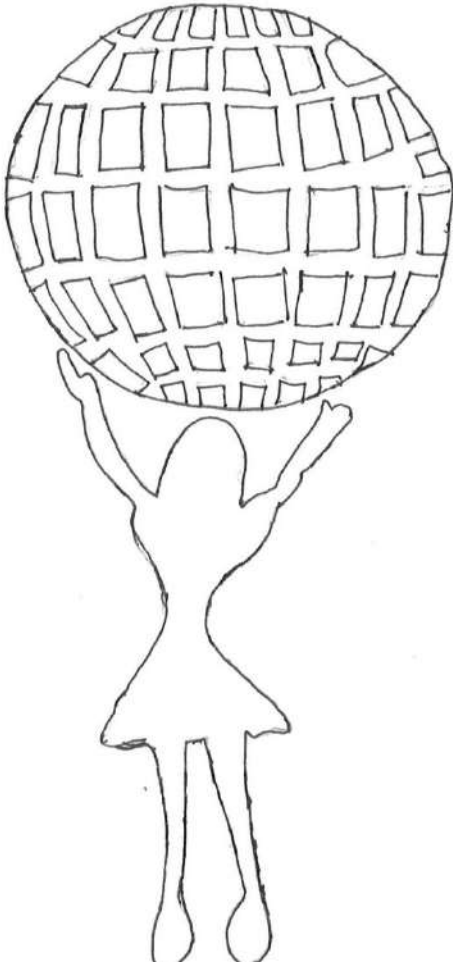
इसका मतलब है की व्यक्तित्व को निखारने के लिए प्रकृति लिंग का भेदभाव नहीं करती है। इसीलिए आज आवश्यकता इस बात की है की हमें महिलाओं का सशक्तिकरण करने के लिए महिलाओं को एहसास दिलाना होगा की उनमें अपार शक्ति है, उनको अपनी आंतरिक शक्ति को जगाना होगा। क्योंकि जिस प्रकार एक पक्षी के लिए केवल एक पंख के सहारे उड़ना संभव नहीं है, वैसे ही किसी राष्ट्र की प्रगति केवल शिक्षित पुरुषों के सहारे नहीं हो सकती है

राष्ट्र की प्रगति व सामाजिक स्वतंत्रता में शिक्षित महिलाओं की भूमिका अहम रही है जितना की पुरुषों का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जब नारी ने आगे बढ़कर अपनी बात सही तरीके से रखी है, समाज और राष्ट्र ने उसे पूरा सम्मान दिया है और आज की नारी भी अपने भीतर की शक्ति को सही दिशा निर्देश दे रही है यही कारण है कि वर्तमान में महिलाओं की परिस्थिति एवं उनके अधिकारों में वृद्धि स्पष्ट देखी जा सकती है। आज समाज में लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से भी लोगो की सोच में बहुत भारी बदलाव आया है। आधिकारिक तौर पर भी अब नारी को पुरुष से कमतर नहीं आका जाता है। यही कारण है कि माहिलायें पहले से अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर हुई हैं।

वर्तमान में महिला को अबला नारी मानना गलत है आज की नारी पढ़ लिखकर स्वतंत्र है, अपने अधिकारों के प्रति सजग भी है। आज की नारी स्वयं अपना निर्णय लेती है। आज की नारी “शक्ति का सघन पुंज” है। यह शक्ति जिस रूप में प्रकट होती है, वह उसी रूप में परिलक्षित होती है। आज की नारी जब अपने अबोध एवं नवजात बालक को स्तनपान करती है तो वह वात्सल्य एवं ममता का साकार रूप होती है। जब वह अपने केंद्र पर खड़ी

होकर हुंकार भरती है तो वह दुर्गा एवं कालिरूपा बन जाती है, फिर उसकी दृढ़ता एवं साहस के सामने कोई नहीं टिकता है। जब नारी अपनी सुकोमल संवेदनाओं के संग विचरती है तो सृष्टि में सौन्दर्य की एक नयी आभा, एक दिव्य प्रकाश बिखर जाता है।

वर्तमान स्थिति में नारी ने जो साहस का परिचय दिया है, वह आश्चर्यजनक है। आज नारी की भागीदारी के बिना कोई भी काम पूर्ण नहीं माना जा रहा है। समाज के हर क्षेत्र में उसका परोक्ष-प्रत्यक्ष रूप से प्रवेश हो चुका है। आज तो कई ऐसे प्रतिष्ठाण एवं संस्थाए हैं, जिन्हें केवल नारी संचालित करती है। हालाँकि यहाँ तक का सफ़र तय करने के लिए महिलाओं को काफी मुश्किलों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है। इसके बावजूद महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए मिलों लम्बा सफ़र करना है, जो कंटकपूर्ण एवं दुर्गम है लेकिन अब महिलाएं हर क्षेत्र में आने लगी हैं।



आज की नारी जागृत एवं सक्रिय हो चुकी है। वह अपनी शक्तियों को पहचानने लगी है जिससे आधुनिक नारी का वर्चस्व बढ़ा है व्यापार और व्यवसाय जैसे पुरुष एकाधिकार के क्षेत्र में जिस प्रकार उसने कदम रखा है और जिस सूझ बुझ एवं कुशलता का परिचय दिया है, वह अद्भुत है। बाज़ार में नारियों की भागीदारी बढ़ती जा रही है। तकनीकी एवं इंजीनियरिंग जैसे पेचीदा विषयों में उसका दखल देखते ही बनता है। किसी जमाने में अबला समझी जाने वाली नारी को मात्र भोग एवं संतान उत्पत्ति का जरिया समझा जाता था। उन्हें घर की चारदीवारी में रहना पड़ता था और ऐसे में नारी की उपलब्धियों को इतिहास के पन्नों में ढूँढना पड़ता है। जिन औरतों को घरेलू कार्यों में समेट दिया गया था, वह अपनी इस चारदीवारी को तोड़कर

बाहर निकली है और अपना दायित्व स्फूर्ति से निभाते हुए सबको हैरान कर दिया है। इक्कीसवीं सदी की नारी के जीवन में सुखद संभावनाएं लेकर आई है। नारी अपनी शक्ति को पहचानने लगी है, वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। शक्तिस्वरूप नारी की सफलता के आंकड़ों का वर्णन करे तो शायद उसे समेट पाना संभव नहीं होगा, परन्तु

विश्लेषण करने पर पता चलता है की नारी की प्रकृति बड़ी अनोखी और बेजोड़ होती है। उसमें अनगनित तत्व एक साथ समाये होते हैं। हरेक तत्व की अपनी खास विशेषता होती है।

नारी करुणा भी है तो निष्ठुरता भी है, वात्सल्य भी है तो भोग की चरम कामना भी है, त्याग भी है तो मोह का प्रचंड चक्रवात भी उमड़ता -घुमड़ता है। इसमें प्रेम भी समाहित है और घृणा भी शामिल है। इसी में भक्ति के साथ बहिरंग का आकर्षण भी है। इसी में सौन्दर्य के साथ विभत्सता भी है। इसमें पवित्रता और कुटिलता दोनों समिलित हैं। ये दोनों विपरीत तत्व बड़ी तीव्रता एवं बहुलता में नारी में उपस्थित हैं। नारी शक्ति की पहचान “मीरा” ने भक्तिभाव को बढ़ाया था। उसने पांच हजार वर्ष पूर्व के कृष्ण को, राधा के समान उपलब्ध कर लिया। गार्गी,घोषा,अपला ने ज्ञान तत्व को विकसित किया था और वे इतनी पारदर्शी ज्ञानी बन गईं की उन्हें ऋषिकाओं के नाम से संबोधित करते हैं।

माता देवकी ने कठोर तप किया था और इसी कारण उनके दिव्य गर्भ से भगवान श्री कृष्ण ने जन्म लिया था। कालितत्व भी नारी में ही समाहित है। इसे बढ़ाने वाली थी क्षत्रनियाँ, जिनके कोमल करों में तलवारे खनकती थीं।घोड़ों की पीठ पर वे बिजली के समान कौंधती थीं। रानी लक्ष्मीबाई ने ऐसी वीरता का परिचय दिया था। मलाला युसुफजई जिन्हें उत्कृष्ट कार्यों के लिए सबसे कम उम्र में नोबेल प्राइज मिला।

आज के दौर में स्त्री परिवार को चुनौती देती हुई महत्वाकांशा के सपने संजोती हुई अपने विकास को अवरुद्ध करने वाली सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ती आर्थिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त करती तथा स्त्रियों की पारम्परिक भूमिका से भिन्न खड़ी अपनी अलग जमीन तलाशती स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है। जो अपने व्यक्तित्व से अथाह प्रेम करती है और उसे कहीं कुंठित नहीं होने देती। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के प्रयास के साथ वह अपनी अस्मिता के प्रति पूरी तरह सजग है। इसी कारण स्वामी विवेकानंद ने कहा था -

“नारी का उत्थान स्वयं नारी ही करेगी। कोई और उसे उठा नहीं सकता। वह स्वयं उठेगी। बस,उठने में उसे सहयोग की आवश्यकता है और जब वह उठ खड़ी होगी तो दुनिया की कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती। वह उठेगी और समस्त विश्व को अपनी जादुई कुशलता से चमत्कृत करेगी।”

शक्ति तो शक्ति होती है, वह जहाँ पर लगेगी,अपना परिचय देगी। ठीक इसी प्रकार नारी शक्ति हैं, उसे स्वयं में पवित्रता और साहस, शौर्य को फिर बढ़ाना होगा, जिससे की उसे भोग्या के रूप में न देखा जा सके। यदि वह अपने स्वरूप को पहचान सकेगी तो वह आज के अश्लील मार्किट में बिकने से बच सकेगी।

—\*X\*—

हिंदी आम बोलचाल की  
'महाभाषा' है।  
जॉर्ज ग्रियर्सन

## भारतीय शिक्षा प्रणाली



*नवदीप राय, एमटीएस*

भारत बड़ी आबादी वाला विकासशील देश है जहां एक ओर भारत आने वाले कुछ वर्षों में सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था वाला देश बनेगा वहीं दूसरी ओर भारत में रोजगार की कमी बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि देखी जाएगी। क्या भारतीय शिक्षा प्रणाली इतनी अच्छी नहीं है कि इस शिक्षा से रोजगार प्राप्त करवा सकें? भारत में कई महान वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियरों ने शिक्षा ली और विश्व में उन्होंने भारत का नाम रोशन किया है।

फिर भी यह चिंतनीय विषय है कि आज की भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व स्तर पर बेहतरीन शिक्षा प्रणाली बनने के मामले में बहुत पीछे है। इस बात पर भी गौर करने की आवश्यकता है कि आखिर बड़ी संख्या में छात्र अध्ययन करने के लिए दूसरे देश क्यों जा रहे हैं। बेरोजगारी की बढ़ती दर से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह शिक्षा प्रणाली पर्याप्त अवसर और रोजगार देने में पूरी तरह से सफल नहीं हुई है। हमारी शिक्षा प्रणाली अभी भी मात्र कक्षा शिक्षण तक ही सीमित है और विद्यार्थियों के प्रायोगिक अनुभव के लिए पर्याप्त उपकरण और संसाधन मौजूद नहीं है, जिससे वह अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद भी अपनी आजीविका चलाने और रोजगार पाने में असफल है। विद्यार्थियों को दिए जाने वाली शिक्षा का बाहरी दुनिया में मिलने वाले रोजगार के अवसरों से प्रत्यक्ष रूप से संबंध नहीं है। जिसके कारणवश विद्यार्थी इस परिस्थिति का सामना नहीं कर पाते और निराश हो जाते हैं।

हालांकि पिछले कुछ समय में केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इस मुद्दे को गंभीरता से लिया गया है और शिक्षा एवं रोजगार के बीच इस दूरी को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार की कई योजनाएं इस विषय पर सराहनीय कार्य कर रही हैं। आज के समय में शिक्षा को “शून्य घाटा” का व्यापार समझा जाने लगा है। प्रायवेट स्कूलों में शिक्षा के नाम में धोखाधड़ी हो रही है कई प्रायवेट स्कूल अच्छी शिक्षा के लिए अभिभावकों से बड़ी राशि लेते हैं परन्तु शिक्षा के नाम पर सिर्फ युनिफार्म, मोटी-मोटी किताब, कापी दे देते हैं। सरकारी विद्यालयों की हालत इससे भी बदतर है। गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए सरकारी विद्यालय एकमात्र साधन है परन्तु विद्यालय में शिक्षक ही अनुपस्थित रहते हैं या कक्षा में पढ़ाने ही नहीं आते हैं।

इस शिक्षा प्रणाली की गंभीरता से जांच पड़ताल कर इसमें पूर्ण बदलाव लाना चाहिए। अयोग्य शिक्षक और विद्यालयों पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा जिससे उनकी शिक्षा और रोजगार का तालमेल कैसे हो इस विषय पर भारतीय शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम और ढांचे पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जिसको समय के अनुसार लोगों की बदलती जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सके। जिसके परिणामस्वरूप रोजगार के बेहतर

संभावनाओं की उत्पत्ति होगी और हम अपने देश के 'प्रतिभा-पलायन' की समस्या पर भी काबू करने में सफल होंगे।

इस बात को समझना चाहिए कि हमारे राष्ट्र का भविष्य हमारे युवाओं पर निर्भर करता है, यदि वह सशक्त बनेंगे तो वैश्विक स्तर पर हमारे देश को तरक्की करने और नई ऊँचाईयों को छुने से कोई नहीं रोक पाएगा।

—\*X\*—

## “बचपन की वो बरसात आज भी याद है!”



ऋषभ राज, एमटीएस

एक दिन अचानक काले-काले बादल घिर आये और जोरो की बारिश होने लगी। मैं भी अपनी खिड़की के पास आ गया और बारिश की बूँदे देखते-देखते कब अपने बचपन में चला गया पता न चला। आज भी याद है खिड़की से बरसात के बूँदों को अपने हाथ में पकड़ने की वो नाकाम कोशिश करना और बारिश के रुक जाने के बाद पुरे उत्साह से घर के बाहर निकलना। मोहल्ले की गलियों में चारों ओर पानी देखकर ऐसा लगता था मानों कोई समंदर हो। गली का वो समन्दर आज भी याद है, जहाँ हम अपने पैरों से उसी पानी में छाई छप छाई का खेल खेला करते थे।



आज भी याद है वो बरसात जो स्कूल न जाने का एक बहाना बन जाया करती थी। वो छतरियां जिन्हें हमें बारिश की बूँदों से खुद को बचाने के लिए दिया जाता था पर किसे परवाह थी की बारिश में भीग जाने से बीमार भी हो सकते हैं। वो कीचड़ से सने काले-सफ़ेद जूते जो मां से डांट खिलवाते थे, वो कागज़ के नाव की प्रतियोगिता की किसकी नाव सबसे आगे जाती है उस पानी के समंदर में। मुझे याद है अगले दिन कूड़ा साफ करने के लिए गरीबन काका आते थे और उन कागज़ की नावों को देखकर जोर जोर से डांट लगाते और हम घर के अन्दर छुपकर मुस्कराकर उनकी डांट सुना करते थे।

पापा के घर आते ही शाम को मां से समोसे की फरमाईस करना, वो बचपन के गरमा गरम समोसे आज भी याद है। वो बचपन की बरसात आज भी याद है। वो बारिश कही गुम हो गई है, इन्ही ख्यालों में मैं गुम था कि सड़क पे जोर से कार की हॉर्न सुनाई दी और मेरा ध्यान टुटा, बारिश भी थम गई थी। 10 बज गये थे। मैं भी दफ्तर (ऑफिस) जाने को तैयार होने लगा ये सोच की वो बचपन की बरसात फिर नहीं आ सकती।

—\*X\*—

## दोस्ती



कुमार मृणाल, वरीष्ठ लेखापराक्षक

“दोस्ती” ये शब्द कितना अच्छा लगता है। ये रिश्ता उतनाही खुबसूरत होता है। जिंदगी के रास्तों में हमें बहुत से दोस्त मिलते हैं, दोस्ती तो हर कोई करता है लेकिन इसे बहुत कम लोग ही निभा पाते हैं।

दोस्ती का रिश्ता हर किसी के लिए बेहद खास और अनमोल होता है। यह वो रिश्ता होता है, जिसमें ढेर सारा प्यार, अपनापन, स्नेह छिपा होता है। दोस्ती में छोटी-मोटी नोकझोंक के साथ ढेर सारा प्यार और समर्पण की भावना भी होती है।

दोस्ती के बिना हर किसी का जीवन अधूरा रहता है, क्योंकि एक दोस्त ही होता है, जिससे हम अपने सुख-दुख और अपने मन की बातें बेझिझक शेयर कर सकते हैं, क्योंकि कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिसे हम अपने माता-पिता या फिर भाई-बहन से नहीं कर सकते हैं, लेकिन दोस्तों के साथ बिना किसी हिचक के शेयर करते हैं।

जिंदगी के हर पड़ाव पर अलग-अलग तरह के लोग मिलते हैं, जिनमें से कुछ ऐसे होते हैं जो जिंदगी भर एक सच्चे दोस्त की तरह हर मुश्किल घड़ी में साथ की तरह हमारे साथ खड़े रहते हैं और हमें हिम्मत देते हैं और फिर नए सिरे से जिंदगी जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

दोस्ती के मायने शब्दों में नहीं पिये जा सकते हैं, लेकिन दोस्त के लिए अपनी-अपनी भावनाओं को कविताओं के माध्यम से उजागर किया जा सकता है, साथ ही अपने जीवन में दोस्त की अहमियत को बताया जा सकता है। इसलिए आज हम अपने इस आर्टिकल में आपको कुछ दोस्ती पर कविताएं उपलब्ध करवा रहे हैं, जिन्हें आप फ्रेंडशिप डे के मौके पर सोशल मीडिया साइट्स फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि पर शेयर कर सकते हैं और दोस्तों के साथ न सिर्फ अपनी सुनहरी और मीठी यादों को ताजा कर सकते हैं, बल्कि अपनी भावनाओं को भी उजागर कर सकते हैं।

दोस्ती एक बेहद खास एहसास है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। जिंदगी में कई दोस्त ऐसे मिलते हैं, जो हमारे लिए किसी खून के रिश्ते से भी ज्यादा करते हैं और वे कभी इस बात को जताते भी नहीं हैं।



इस रिश्ते में भावनाओं को सिर्फ समझा जा सकता है। दोस्ती का रिश्ता ही एक ऐसा रिश्ता होता है, जो कि खून का रिश्ता नहीं होता है, बल्कि इसे हम इसे खुद बनाते हैं और इसे जिंदगी भर निभाते हैं। वहीं जिस तरह हमारे देश में आज की युवा पीढ़ी को रिश्तों की अहमियत बताने और माता-पिता को सम्मान देने के लिए फादर्स डे, मदर्स डे आदि मनाए जाते हैं, उसी तरह हर साल अगस्त महीने के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे मनाया जाता है।



इस मौके पर लोग अपने दोस्त के प्रति अपनी भावनाओं और विचारों को सोशल मीडिया साइट्स व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर कोट्स मैसेजेस आदि शेयर कर अपनी भावनाओं को उजागर करते हैं।

वहीं अगर आप भी दोस्ती के इस त्योहार को खास बनाना चाहते हैं तो, इस आर्टिकल पर उपलब्ध किसी एक कविता को सोशल साइट्स पर शेयर कर दोस्तों के साथ अपनी प्यारी यादों को ताजा कर सकते हैं और दोस्ती का सुखद एहसास ले सकते हैं।

हर किसी की जिंदगी में एक दोस्त ऐसा होता है, जो उसकी जिंदगी में खुशियां भरने का काम करता है। बिना दोस्त का जीवन में वो आनंद नहीं होता है, जो

दोस्त के साथ होता है।

एक सच्चा दोस्त न सिर्फ हमारे जीवन से अंधकार को मिटाकर उसमें रोशनी भरता है बल्कि हसीन ख्वाब भी दिखाता है और हमारी बुराईयों और कमियों को दूर कर हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

वहीं जब हम सबसे मुश्किल घड़ी में होते हैं, तब हमारे दोस्त ही होते हैं जो हमें उस मुश्किल समय से उभारने का काम करते हैं और हमें आगे बढ़ने की हिम्मत देते हैं। वहीं दोस्तों के सामने ही हम खुद को वैसे दिखाते हैं, जो कि वास्तव में हम होते हैं। दोस्ती का रिश्ता ऐसा होता है, जिसमें किसी भी तरह का कोई बनावटीपन और औपचारिकता नहीं होता है।

दोस्तों की वजह से हमें कई बार खुद के बारे में ही कई सारी चीजें जानने को मिलती हैं। एक अच्छा और सच्चा दोस्त हमारे अंदर की बुराईयों को जानते हुए भी हमें अपनाता है, और हमारे भविष्य पर भरोसा रखता है एवं हमें गलत रास्ते पर चलने से रोकता है।

जिंदगी में कई ऐसे मोड़ आते हैं, जब दोस्त एक दोस्त को दूसरे दोस्त से जुदा होना पड़ता है। या फिर हालात कई बार ऐसे बन जाते हैं जिससे चलते दोस्तों का आपस में मिलना-जुलना बंद हो जाता है, वे अपनी-अपनी जिंदगी में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि कभी एक-दूसरे से एक पल की दूरी भी बर्दाश्त भी नहीं कर पाने वाले दोस्त सालों एक-दूसरे से बात तक नहीं कर पाते हैं, लेकिन उनके पास कई ऐसी यादें होती हैं, जिनकी बदौलत वे जिंदगी भर काट लेते हैं।

वहीं दोस्ती के इस त्योहार फ्रेंडशिप डे एक ऐसा इवेंट होता है, जो कि न सिर्फ हमें अपने दोस्ती का जश्न बनाने का मौका देता है, बल्कि अपने दोस्तों के साथ बिताए गए सुनहरे पलों की याद दिलवाता है।

वहीं इस तरह की कविताओं के माध्यम से हम अपनी भावनाओं को अपने दोस्त के लिए बेहद अच्छे तरीके से उजागर कर सकते हैं और सोशल मीडिया साइट्स व्हाट्सऐप, फेसबुक आदि में शेयर कर उन्हें स्पेशल महसूस करवा सकते हैं।

एक दिन जिंदगी ऐसे मुकाम पर पहुँच जाएँगी। दोस्ती तो सिर्फ यादों में ही रह जाएँगी। हर बात दोस्तों की याद दिलायेगी। और हँसते हँसते फिर आँख नम हो जाएँगी। ऑफिस के रूम में क्लासरूम नज़र आएँगी। पैसे तो बहुत होंगा। लेकिन खर्चा करने के लम्हें काम हो जायेंगे। जी लेंगे खुल के इस पल को मेरे दोस्त। क्यूँ के जिंदगी इस पल को फिर से नहीं दोहराएँगी।

—\*X\*—

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके  
बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की  
अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

**मैथिलीशरण गुप्त**

## सुकरात के तीन प्रश्न



सोमवती, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

आज हम इंटरनेट की दुनिया में रह रहे हैं। या यूँ कह सकते हैं कि हमारी सोच, व्यवहार, पसंद-नापसंद काफी हद तक सोशल मीडिया द्वारा प्रभावित हो रही है। आज इतना कुछ सोशल मीडिया पर परोसा जा रहा है कि विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि क्या सच है और क्या सच नहीं। कई बार बहुत ही भ्रामक जानकारी होती है जो समाज के सोशल फैब्रिक के लिए कतई भी सही नहीं होती। व्हाट्सएप्प, फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टा पर लोग बेपरवाह होकर कुछ भी पोस्ट कर देते हैं, बिना यह जांचे की इसमें कितनी सच्चाई है एवं इसके दूरगामी परिणाम क्या हो सकते हैं।



ऐसा हर जगह देखने को मिलता है चाहे वह हमारा वर्कप्लेस हो, पड़ोस हो, या कोई भी सामाजिक उत्सव जहाँ हम गॉसिप के नाम पर किसी व्यक्ति के बारे में बोलना शुरू कर देते हैं और बड़े आनंद के साथ दूसरे व्यक्ति की हाँ में हाँ मिलाने हैं बिना यह सोचे की वह बात कितनी विश्वसनीय है

और दूसरों के बारे में जो कहा और सुना कितना जायज़ और हितकर है? अगर हम किसी के बारे में गलत बोलते हैं और सुनते हैं वह कुछ समय के लिए हमारा मनोरंजन कर देता है पर हमारी आत्मा को सुन्न कर देता है जो सही और गलत में अंतर करना भूल जाती है। इसीलिए जो भी सुने उसे अपने ज्ञान व परख की कसौटी पर अवश्य जांच ले।

इस सम्बन्ध में मैं महान दार्शनिक सुकरात के जीवन से जुड़ी एक छोटी सी घटना का विवरण देना चाहूंगी जो आज हम सबको प्रेरणा दे सकती है। सुकरात बहुत ही ज्ञानवान और विनम्र दार्शनिक थे। एक बार वो बाज़ार से गुजर रहे थे तो रास्ते में उनकी एक सज्जन से मुलाकात हुई। उन सज्जन ने सुकरात को रोक कर कुछ बताना शुरू किया। वह कहने लगा की “क्या आप जानते हैं कि कल आपका मित्र आपके बारे में क्या कह रहा था?”

सुकरात ने उस व्यक्ति की बात को वहीं रोकते हुए कहा सुनो भले आदमी, मेरे मित्र ने मेरे बारे में क्या कहा यह बताने से पहले तुम मेरे तीन छोटे से प्रश्नों का उत्तर दो। उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा -“तीन छोटे प्रश्न!”

सुकरात ने कहा - हां, तीन छोटे प्रश्न। पहला प्रश्न तो यह की क्या तुम मुझे जो कुछ भी बताने जा रहे हो क्या वह पूरी तरह सही है? उस आदमी ने जवाब दिया - “नहीं, मैंने अभी-अभी यह बात सुनी और .....। “सुकरात ने कहा - कोई बात नहीं, इसका मतलब यह है की तुम्हें नहीं पता की तुम जो भी कहने जा रहे हो वह सच है या नहीं।”



अब तुम मेरे दुसरे प्रश्न का जवाब दो की “जो कुछ भी तुम मुझे बताने जा रहे हो वह मेरे लिए अच्छा है?” आदमी ने तुरंत उत्तर दिया “नहीं इसके बिलकुल उल्टा है” सुकरात ने कहा की अब मेरे तीसरे और आखिरी प्रश्न का जवाब दो “जो कुछ भी तुम मुझे

बताने जा रहे हो वो मेरे किसी काम का भी है या नहीं “उस व्यक्ति ने कहा “नहीं! उसमें आप के काम आने जैसा कुछ भी नहीं है।” तीनों प्रश्न पूछने के बाद सुकरात बोले “ऐसी बात जो सच नहीं है, जिसमे मेरे बारे में कुछ भी अच्छा नहीं है, और जिसकी मेरे लिए कोई उपयोगिता नहीं है और उसे सुनने से क्या फायदा और सुनो! ऐसी बातें करने से भी क्या फायदा।

इस संदर्भ में मैं इसरो के महान वैज्ञानिक नंबी नारायण का उदाहरण देना चाहूंगी जिनको जासूसी के झूठे केस में फसाया गया था और उन पर यह आरोप था कि वो रॉकेट और सैटेलाइट लांचिंग का “फ्लाइट टेस्ट डाटा” अन्य देशों की इंटेलेजेंस एजेंसी को लीक कर रहे हैं। उनको 48 दिनों तक जेल में रखा गया एवं उन्हें अनेक मानसिक यातनाएं दी और उन्हें यह कहा कि वे ये मान लें कि उन्होंने यह अपराध किया है लेकिन नारायण जी ने अपनी सच्चाई के लिए लड़ाई जारी रखी। बाद में उच्चतम न्यायालय ने उनके पक्ष में निर्णय दिया और केरल सरकार उन्हें मानहानि की प्रतिपूर्ति देने का आदेश दिया। इस उदाहरण को प्रस्तुत करने का मेरा मकसद यही है कि हम किसी के भी बारे में बिना सोचे समझे अपनी राय ना बनाएं एवं किसी के व्यक्तित्व को नुकसान ना पहुंचाएं। किसी के भी बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले सुकरात के तीन प्रश्न अपने आप से पूछें एवं इसे जीवन में उतारने का प्रयत्न करें।

—\*X\*—



## भू-जल

समरजीत बनर्जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भू-जल एक बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। यह वह पानी है जो मिट्टी, रेत और चट्टान दरारें और स्थानों में भूमिगत पाया जाता है। इसे मिट्टी, रेत और चट्टानों के भूगर्भिक संरचनाओं के माध्यम से संग्रहीत होता रहता है इसे एक्वीफर्स कहा जाता है। अधिकांश भू-जल वर्षा से आता है। ज़मीन की सतह के नीचे की मिट्टी का क्षेत्र में बारिश की घुसपैठ होती है। जब मिट्टी का क्षेत्र संतृप्त हो जाता है, तो पानी नीचे की ओर मुड़ जाता है। संतृप्त का एक क्षेत्र होता है, जहां सभी दरारें पानी से भरे होते हैं। वातन का एक क्षेत्र भी है जहां दरारों पर पानी आंशिक रूप से और हवा आंशिक रूप से कब्जा कर लेती है। भू-जल तब तक नीचे उतरता रहता है जब तक कुछ गहराई पर यह घने चट्टान के क्षेत्र में विलीन हो जाता है। पानी ऐसी चट्टानों के छिद्रों में निहित है, लेकिन छिद्र आपस में जुड़े नहीं हैं और पानी माइग्रेट नहीं होगा। भू-जल आपूर्ति को फिर से भरने वाली वर्षा की प्रक्रिया को रिचार्ज के रूप में जाना जाता है।

सामान्य तौर पर, रिचार्ज केवल उष्णकटिबंधीय मौसम में वर्षा के दौरान या शीतोष्ण जलवायु में सर्दियों के दौरान होता है। आमतौर पर पृथ्वी पर, गिरने वाली 10 से 20 प्रतिशत वर्षा जलप्रवाह वाले जल क्षेत्र में प्रवेश करती है। जिसे एक्वीफर्स के रूप में जाना जाता है। भू-जल लगातार गति में है। सतह के पानी की तुलना में, यह बहुत धीमी गति से चलता है। वास्तविक दर एक्वीफर्स की संचारण एवं भण्डारण क्षमता पर निर्भर है। भू-जल का प्राकृतिक बहिर्वाह, स्प्रिंग्स और रिवरबेड के माध्यम से होता है। जब भू-जल का दबाव जमीन की सतह के आसपास के वायुमण्डलीय दबाव से अधिक होता है। आतंरिक परिसंचरण आसानी से निर्धारित नहीं होता है, लेकिन पानी की मेज़ के पास पानी का औसत सायक्लिंग समय एक वर्ष या उससे कम हो सकता है, जबकि गहरे एक्वीफर्स में यह हजारों साल तक हो सकता है। भू-जल प्रणाली के तीन प्रमुख प्रकार हैं - पारंपरिक, तटिय और करस्ट प्रणाली। पूरे विश्व में भारी मात्रा में भू-जल और बड़ी संख्या में भू-जल भण्डार की खोजबीन नहीं की गई है या अभी भी अविकसित है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भू-जल के लगभग 5.97 क्वीटल गैलन [22.6 मिलियन क्यूबिक किमी.(5.4 मिलियन क्यूबिक मीमी.)] पृथ्वी की सतह के ऊपरी 2 किमी में रहते हैं। सबसे अधिक बार जाँच कि गई या शोषित भू-जल जलाशयों में समशीतोष्ण घाटियों और तटिय मैदानों में समशीतोष्ण या शुष्क परिस्थितियों में पाए जाने वाले गैर-समेकित क्लेस्टिक (मुख्य रूप से रेत और बजरी/कंकण) या कार्बोनेट हार्ड रॉक प्रकार के होते हैं। भूमि की जुताई भूमि की सतह के घुसपैठ और अपवाह विशेषताओं को बदल देती है, जो भू-जल के पूनर्भरण और पानी की डिलीवरी एवं सतह-जल

निकार्यों के तलछट और वाष्पीकरण को प्रभावित करती है। ये सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से भू-जल और सतही जल की परस्पर क्रिया को प्रभावित करती है।

मध्य पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में ओगबाला एक्वीफर, भारत और पाकिस्तान को बनाए रखने वाली ऊपरी गंगा, एक नए अध्ययन के अनुसार, उन एक्वीफर में से कई को अब सिंचाई और अन्य उपयोग द्वारा वर्षा के पानी द्वारा फिर से भरने की तुलना में तेजी से चूसा जा रहा है। भू-जल शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, कभी-कभी विशाल कृषि और औद्योगिक उद्यमों की सहायता करता है जो अन्यथा मौजूद नहीं हो सकती। यह विशेष रूप से भाग्यशाली है कि समय के बीतने के साथ शुष्कता में वृद्धि से रेगिस्तानों के गठन को रोकने वाले एक्वीफर्स अप्रभावित रहते हैं। हालांकि भू-जल बेसिन के सबसे बड़े हिस्से को समाप्त कर देगा ताकि एक्वीफर्स के अस्तित्व के आधार पर विकास केवल अस्थायी रूप से हो सके। भू-जल का देश के आधार पर अलग-अलग उपयोग होता है, और आंशिक रूप जलवायु पर निर्भर करता है। प्रचुर वर्षा वाले कुछ देशों जैसे कि इंडोनेशिया और थाइलैंड में सिंचाई की जरूरत बहुत कम है इसलिए घरेलू पानी की आपूर्ति भू-जल के लिए मुख्य उपयोग में है। वैश्विक स्तर पर, दो अरब से अधिक लोग भू-जल का उपयोग पीने के पानी के स्रोत के रूप में करते हैं। भू-जल को अच्छी तरह से ड्रिल करके एक्वीफर्स से निकाला जा सकता है। एक कुआं ज़मीन में एक पाइप की तरह है जो भू-जल से भरता है। इस पानी को एक पंप द्वारा सतह पर लाया जा सकता है। यदि कुओं के तल से पानी की मेड़ नीचे गिरती है तो उथले कुएँ सूख सकते हैं।

भू-जल सिंचाई के लिए पानी के हमारे सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है। दुर्भाग्य से, भू-जल प्रदूषकों के लिए अति संवेदनशील है। भू-जल संदूषण तब होता है जब मानव निर्मित उत्पाद जैसे गैसोलिन, तेल, सड़क लवण (सड़क का साल्ट) और रसायन भू-जल में मिल जाते हैं और इसके कारण मानव उपयोग के लिए असुरक्षित और अयोग्य हो जाता है। भू-जल संदूषण के प्रमुख स्रोत कृषि रसायन, सेप्टिक अपशिष्ट, लैंडफिल, खतरनाक अपशिष्ट साइट्स, संचियन टैंक, वायुमण्डलीय प्रदूषक, भूमिगत पाइप और सड़क का साल्ट (लवण) है। यह भू-जल संदूषण अक्सर मानव गतिविधियों के कारण होता है, मुख्य रूप से भू-जल के अति प्रयोग से, जब मिट्टी ढहती है, संकुचित होती है और गिरती है। तटीय क्षेत्रों में अत्यधिक पंपिंग से खारे पानी को अंतर्देशीय ओर उपर की ओर ले जाया जा सकता है। जिसके परिणामस्वरूप खारे पानी की आपूर्ति दूषित हो जाती है। लेकिन यह भू-जल हमेशा के लिए नहीं रह सकता। नासा के ग्रेस उपग्रहों के डाटा से पता चला है कि दुनिया के 37 सबसे बड़े एक्वीफर्स में से 13 को सिंचाई द्वारा गंभीर रूप से नष्ट किया जा रहा है जो बारिश या अपवाह से रिचार्ज हो सकते हैं लेकिन बहुत समयकाल आवश्यक है।

—\*X\*—

## आतंकवाद और सर्जिकल स्ट्राइक



विशाल सिंह, एमटीएस

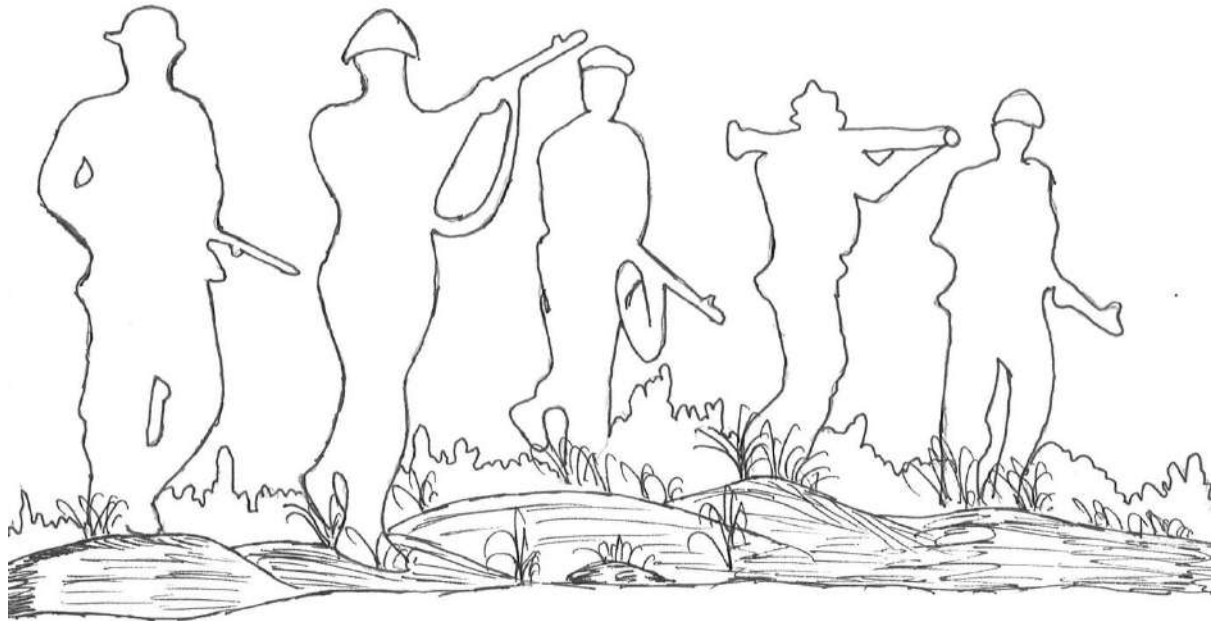
भारतीय वायु सेना द्वारा 26 फ़रवरी 2019 को तड़के तीन बजे पकिस्तान के ख़ैबर पख्तुन्वाला प्रान्त के बालाकोट स्थित जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादी प्रशिक्षण केंद्र पर जो हमला किया गया उसे आतंकवाद के विरुद्ध भारत का निर्णायक कदम माना जा सकता है। यह भारत की वर्तमान में आतंकवाद के विरुद्ध जीरो टोलरेंस की नीति का अंजाम है, इसे सर्जिकल स्ट्राइक-2 के नाम से जाना जाता है।

भारत के नीति निर्माता भी इस कार्यवाही की गंभीरता से परिचित हैं इसीलिए भारत के विदेश सचिव ने अपने प्रेस वक्तव्य में इस कार्यवाही को कुटनीतिक भाषा में गैर-सैनिक निवारक कार्यवाही की संज्ञा दी है इसका निहितार्थ यह है कि भारत का यह ऑपरेशन एक सैनिक ऑपरेशन नहीं है क्योंकि इसमें पाकिस्तान के नागरिकों अथवा उसके सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना नहीं बनाया गया है इसमें भारत ने अपनी आत्मरक्षा में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया है। क्योंकि भारत के पास इस तरह की पुख्ता सूचना थी की बालाकोट में प्रशिक्षण पा रहे आतंकवादी भारत में एक अन्य हमला करने वाले हैं।

भारत द्वारा की गई बालाकोट कार्यवाही 14 फरवरी 2019 को जम्मू कश्मीर राज्य के पुलवामा स्थान पर जैश-ए-मोहम्मद द्वारा किये गये आत्मघाती हमले के विरोध में की गई थी, पुलवामा आतंकवादी हमले में सी.आर.पी.एफ के 40 से अधिक जवान शहीद हुए थे। पुलवामा आतंकवादी हमला भारत की सुरक्षा सेनाओं के विरुद्ध अब तक का सबसे बड़ा आतंकी हमला है इस हमले के विरुद्ध भारतीय जनता, राजनितिक दलों तथा विश्व समुदाय द्वारा तीव्र प्रतिक्रिया व आक्रोश व्यक्त किया गया था, पाकिस्तान ने पूर्व की भांति हमले में अपनी सलिप्तता से इन्कार करते हुए पुख्ता सबूत मिलने के बाद ही कार्यवाही की बात की, जबकि पकिस्तान स्थित आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद द्वारा सरेआम पुलवामा घटना की जिम्मेदारी ले ली गई थी। वैसे तो भारत ने 29 सितम्बर 2016 को उरी आतंकवादी हमले की प्रतिक्रियास्वरूप पाक-अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी लॉचिंग पैड को तबाह किया था जिसमे 34 आतंकवादी मारे गये थे, लेकिन बालाकोट में की गई भारत की कार्यवाही आतंकवाद के विरुद्ध भारत द्वारा की गई सभी कार्यवाहियों से भिन्न है बालाकोट की कार्यवाही का मंतव्य यह संदेश देना है कि भारत अब अपनी आत्मरक्षा में आतंकवादियों को दण्डित करने के लिए पकिस्तान की संप्रभु सीमाओं की परवाह नहीं करेगा, उल्लेखनीय है कि बालाकोट पाक-अधिकृत कश्मीर के विवादित क्षेत्र में नहीं वरन पाकिस्तान की संप्रभु सीमा में



नियंत्रण रेखा से 80 किमी अंदर स्थित है भारत की इस कार्यवाही का यह भी संदेश गया की अब आतंकवादी ठिकाने पाकिस्तान में कहीं भी सुरक्षित नहीं है इस हमले के बाद आतंकवादियों को अपने प्रशिक्षण के लिए अन्य स्थान की तलाश करनी होगी। 1971 के युद्ध के बाद भारतीय सेनाओं ने पहली बार पकिस्तान की मुख्या भूमि में प्रवेश कर हमला किया था।



बालाकोट की घटना को पाकिस्तान ने अपने संप्रभु क्षेत्र का उल्लंघन मानकर भारत के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई की धमकी दी। इसके बाद 27 जनवरी 2019 को ही पाकिस्तानी वायुसेना ने अपने एफ-16 लड़ाकू विमानों से कश्मीर में भारत के सैनिक ठिकानों पर हमला करने का प्रयास किया। भारतीय वायुसेना ने पकिस्तान के प्रयास को विफल कर दिया तथा पाकिस्तान का एक मिग-21 विमान हादसे का शिकार हो गया तथा उसके पायलट विंग कमांडर अभिनन्दन को पाकिस्तान की सेना द्वारा बंदी बना लिया गया। पाकिस्तान ने इस मसले पर भारत को ब्लैकमेल करने की कोशिश की लेकिन भारत ने एक दूसरे बड़े हमले की योजना बनाई इसके साथ ही सऊदी अरब तथा अमेरिका द्वारा पाकिस्तान पर दबाव बनाया गया। अगले ही दिन पाकिस्तान ने भारत के पायलट को 1 मार्च, 2019 को छोड़ने की घोषणा कर दी। भारतीय पायलट के सुरक्षित भारत आने के बाद पाकिस्तान ने भारतीय सीमा से लगे क्षेत्रों पर दो दिन भारी गोलाबारी की, जिससे वहां के निवासियों को दुसरे सुरक्षित स्थान पर ले जाना पड़ा इस तनाव के बीच अब मूल प्रश्न यह है की वर्तमान स्थिति में आतंकवाद व अलगावाद की चुनौती से निपटने के घरेलु तथा बाह्य दोनों स्तरों पर एक व्यापक रणनीति पर काम करने की आवश्यकता है, आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई का यह निर्णायक कदम है यदि इस अवसर पर प्रभावी कदम नहीं उठाये गये तो आतंकवाद की चुनौती अधिक गंभीर रूप धारण कर लेगी।

घरेलू स्तर पर भारत को आतंकवाद से लड़ने की अपनी क्षमता व सूचना तंत्र को अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है क्योंकि इस क्षमता के अभाव में आतंकवाद भारत के अंदर तेजी से पैर पसार रहा है इसके साथ ही भारत को कश्मीर में पनप रही अलगाववाद की भावना का निराकरण करने के लिए आर्थिक व राजनितिक उपाय अपनाने की आवश्यकता है, कश्मीर में युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है उससे विकास व आगे बढ़ने के अवसर कम होते जा रहे हैं वहां लोकतंत्र को भी सक्रीय बनाने की आवश्यकता है, देश के विभिन्न भागों में निवास कर रहे कश्मीर के निवासियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है यदि भारत कश्मीर को अपना अंग मानता है तो यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता भी है कि कश्मीर के लोग भारत से अपने आप को अलग न रखे।

बाह्य स्तर पर कुटनीतिक व सैनिक दोनों प्रकार के उपायों को यथासंभव आवश्यकता अनुसार प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है, कुटनीतिक स्तर पर भारत का यह प्रयास होना चाहिए कि आतंकवाद के मामले पर पाकिस्तान को विश्व में अलग-थलग करने का प्रयास किया जाये साथ ही वहां कार्यरत आतंकवादियों को विश्व स्तर पर प्रतिबिम्बित करने के प्रयास भी तेज किये जाने चाहिए। चूँकि आतंकवाद व अलगाववाद भारत की सुरक्षा तथा अखंडता के लिए वर्तमान में एक बड़ा खतरा है। अतः भारत उसकी अनदेखी करने का जोखिम नहीं उठा सकता। विगत तीस वर्षों में आतंकवाद के प्रति नरम नीति के कारण ही आज यह एक गंभीर चुनौती बन गया है।

—————\*X\*—————

में दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता  
हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह  
में सह नहीं सकता:  
**आचार्य विनोबा भावे**

## जिला - बिजनौर



नमित कुमार हिन्दी आशुलिपिक

मैं, नमित कुमार हिन्दी पत्रिका 'गोमती' अंक तृतीय के माध्यम से अपने जनपद के बारे में कुछ उल्लेख करना चाहता हूँ, मैं उस क्षेत्र के बारे में बताना चाहता हूँ जो अपने-आप में एक विशेष स्थान रखता है।

पर्वतराज हिमालय की तलहटी में दक्षिण भाग पर वन संपदा और इतिहास से समृद्धशाली उत्तर प्रदेश का बिजनौर जनपद अपने भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्व के कारण प्राचीनकाल से ही एक विशेष पहचान रखता है। इस जनपद में 5 तहसील हैं - नजीबाबाद, बिजनौर, चांदपुर, धामपुर, नगीना। हिमालय की उपत्यका में स्थित बिजनौर को जहाँ एक ओर महाराजा दुष्यन्त, परमप्रतापी सम्राट भरत, परमसंत ऋषि कण्व और महात्मा विदुर की कर्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है, वहीं दूसरी ओर साहित्य के क्षेत्र में जनपद ने कई महत्वपूर्ण मानदंड स्थापित किए हैं। उर्दू साहित्य में भी जनपद बिजनौर का गौरवशाली स्थान रहा है।

यह जनपद उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित होने के साथ-साथ पहाड़ी सभ्यता (उत्तराखंड की गढ़वाली सभ्यता) भी संजोये रखता है। गंगा नदी हिमालय की गोद से निकल कर जब मैदानी भागों की ओर जाती है तब सर्वप्रथम इसी जनपद में प्रवेश करती है, जिस वजह से यहां पर हर समय हरियाली रहती है तथा खेती करने वाले किसानों के लिए एक वरदान का काम करती है। यहां पर गन्ना, गेहूँ, चावल, मूँगफली का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। बिजनौर के गन्ने का गुड काफी प्रसिद्ध है।

**इतिहास-** बिजनौर जनपद के प्राचीन इतिहास को स्पष्ट करने के लिए अधिक प्रमाणों का अभाव है। लेकिन सबसे पहले बिजनौर का संदर्भ रामायण काल में आता है। वाल्मीकि रामायण में इस क्षेत्र को प्रलंब तथा उत्तरी कारापथ कहा गया है। उत्तरी कारापथ बिजनौर के मैदानों से लेकर श्रीनगर (गढ़वाल) तक का सम्पूर्ण क्षेत्र प्राचीन काल में लक्ष्मण जी के पुत्रों के अधिकार में रहा था। मध्यकाल तक यहां विदुरकुटी के गंगा तट पर युद्ध प्रदर्शन के रूप में क्षत्रियों का मेला भी लगता था, जिसे अपभ्रंश रूप में छड़ियों का मेला भी कहा जाता है। इस मेले में युद्ध एवं मल्ल युद्ध के प्रदर्शन हेतु देशभर के क्षत्रिय राजा भाग लिया करते थे। महाभारत तथा महाजनपद काल में भी यह क्षेत्र बहुत प्रसिद्ध रहा है। ऐसी मान्यता है कि भगवान कृष्ण जब हस्तिनापुर में कौरवों को समझाने-बुझाने में असफल रहे थे तो वे

कौरवों के छप्पन भोगों को ठुकराकर गंगा पार करके महात्मा विदुर के आश्रम में आए थे और उन्होंने यहाँ बथुए का साग खाया था। आज भी मंदिर के समीप बथुए का साग हर ऋतु में उपलब्ध हो जाता है। पृथ्वीराज और जयचंद की पराजय के बाद भारत में तुर्क साम्राज्य की स्थापना हुई। उस समय यह क्षेत्र दिल्ली सल्तनत का एक हिस्सा रहा। तब इसका नाम 'कटेहर क्षेत्र' था। कहा जाता है कि सुल्तान इल्तुतमिश स्वयं साम्राज्य-विरोधियों को दंडित करने के लिए यहाँ आया था। मंडावर कस्बे में उसके द्वारा बनाई गई मस्जिद आज तक भी है।

**प्रसिद्ध व्यक्ति** - बिजनौर जनपद साहित्यिक इतिहास, कला, खेल, उर्दू शायरी में बहुत संपन्न है। फ़िल्म निर्माता प्रकाश मेहरा, अभिनेता विशाल भारद्वाज, DMRC के MD मंगू सिंह, गज़लकार दुष्यंत कुमार आदि की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त है। खेलों में कबड्डी के सुपर स्टार राहुल चौधरी भी जिला बिजनौर के एक गांव में जन्मे हैं, जो आज पूरे विश्व में भारत की शान हैं।

**दर्शनीय स्थल** - बिजनौर जनपद में अनेक ऐसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल हैं जो इस जनपद की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। इनमें महत्वपूर्ण स्थल है 'कण्व आश्रम'। अर्वाचीन काल में यह क्षेत्र वनों से आच्छादित था। मालिनी नदी और गंगा के संधिस्थल पर रावली के समीप कण्व मुनि का आश्रम था, जहाँ शिकार के लिए आए राजा दुष्यंत ने शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था। रावली के पास अब भी कण्व आश्रम के स्मृति-चिह्न शेष हैं।

बढ़ापुर (नगीना तहसील के अंतर्गत) से लगभग चार किलोमीटर पूर्व में लगभग पच्चीस एकड़ क्षेत्र में 'पारसनाथ का किला' के खंडहर विद्यमान हैं। टीलों पर उगे वृक्षों और झाड़ों के बीच आज भी सुंदर नक्काशीदार शिलाएँ उपलब्ध होती हैं। इस स्थान को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसके चारों ओर द्वार रहे होंगे। चारों ओर बनी हुई खाई कुछ स्थानों पर अब भी दिखाई देती है।

चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार जनपद में बौद्ध धर्म का भी प्रभाव था। इसका प्रमाण 'मयूर ध्वज दुर्ग' की खुदाई से मिला है। ये दुर्ग भगवान कृष्ण के समकालीन सम्राट मयूर ध्वज ने नजीबाबाद तहसील के अंतर्गत जाफरा गाँव के पास बनवाया था। गढ़वाल विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग ने भी इस दुर्ग की खुदाई की थी।

नजीबाबाद स्थित सुल्ताना डाकू का किला के नाम से जाना जाने वाला किला भी काफी दर्शनीय है। जिसका प्रयोग ब्रिटिश काल में युद्धाभ्यास के लिए किया जाता था।

—————\*X\*—————

## घर से दूर नौकरी



प्रधान चौधरी, एमटीएस

घर जाता हूँ तो मेरा ही बैग मुझे चिढ़ाता है  
मेहमान हूँ अब ये पल-पल मुझे बताता है...  
मां कहती है, सामान बैग में फौरन डालो,  
हर बार तुम्हारा कुछ ना कुछ छूट जाता है...  
घर पहुंचने से पहले ही लौटने का टिकट,  
वक्त परिंदे सा उड़ता जाता है...  
उंगलियों पर ले कर जाता हूँ, गिनती के दिन  
फिसलते हुए जाने का दिन पास आ जाता है।  
अब कब होगा आना सबका पूछना,  
ये उदास सवाल भीतर तक बिखराता है...  
घर से दरवाजे तक निकलने तक,  
बैग में कुछ न कुछ भरते जाता हूँ...  
जिस घर की सीढ़ियां भी मुझे पहचानती थीं,  
घर के कमरे के चप्पे-चप्पे में बसता था मैं  
लाइट फैन के स्वीच भूल डगमगाता हूँ मैं...  
पास पड़ोस जहां था बच्चा भी वाकिफ,  
बड़े बुजुर्ग बेटा कब आए, पूछने चले आते हैं...  
कब तक रहोगे पूछ अंजाने में वो,  
घाव एक और गहरा कर जाते हैं...  
ट्रेन में मां के हाथों की बनी रोटियां,  
रोती हुई आंखों में धुंधला जाती है  
लौटते वक्त वजनी हुआ बैग,  
सीट के नीचे पड़ा खुद उदास हो जाता है...  
तु मेहमान है अब ये पल-पल मुझे बताता है,  
आज भी मेरा घर मुझे वाकई बहुत याद आता है।

—\*X\*—

## 230 रूपये की एक्सट्रा बचत



सायक नंदी, एमटीएस

सेन बाबू मार्केट के सामने आकर रुक गए, इस जगह पर आने से अभी उनको बहुत दुख होता है। पहले जब बंकिम और अखिल जिंदा थे तब बचपन के तीन दोस्त मिलकर अपनी सेवानिवृत्ति के बाद जीवन का आनंद लेने हर सुबह यहां आते थे। मगर आठ साल पहले बंकिम कैंसर से और बस दो महीने पहले अखिल तीन साल से ज्यादा तक पैरालाइज्ड रहने के बाद चल बसे। इसलिए वो अब सिर्फ रविवार के ही दिन मार्केट आते हैं। अखिल को उसके आखरी वक्त में देखकर बहुत बुरा लगता था, अपने बचपन के दोस्त को कुछ बोलना चाहता था लेकिन शरीर के 90% पैरालाइज्ड होने के कारण बस अपने होंठ ही हिला सकता था। एक लंबी सांस छोड़ कर मिस्टर सेन मार्केट के अंदर प्रवेश किया।

श्री निहार सेन अपने ज़माने में श्री अरबिंदो सिखायतन स्कूल में गणित के अध्यापक हुआ करते थे, सर्विस के आखरी चार साल स्कूल में सहायक प्रधानाध्यापक भी बने थे। लेकिन उनको सेवानिवृत्त हुए आज 16 साल हो गए। अभी वो अपनी पत्नी श्रीमती स्निग्धा सेन साथ सेंट्रल कोलकाता के एक घर में किराए पर रहते हैं। अपना जो घर था वो उनके इकलौते बेटे सुमित को विदेश में पढ़ाई कराने के लिए गिरवी रखना पड़ा था। सोचा था कि बेटा अच्छी नौकरी लेकर फिर से उनका घर वापस दिला देगा। लेकिन स्वप्न तो स्वप्न ही रह गया। बेटे ने अपना घर विदेश में ही बसा लिया, अभी बस साल भर में कुछ पैसे नाम के वास्ते भेजता है जिसको इतने सालों में सेन बाबू ने हाथ तक नहीं लगाया। बेटे के शोक में मिसेज़ सेन एक न्युरो रोगी बन गयी जो अब कोई भी काम मिस्टर सेन या किसी और की मदद के बिना नहीं कर सकती। मिस्टर सेन भी मधुमेह रोगी हैं, साथ में घुटनों का दर्द भी है। इन सब के साथ महिने का रु. 8500/- पेंशन है जो अभी हाल ही में पोस्ट ऑफिस में एमआईएस की दर कम होने के कारण रु. 350/- कम हो गई है।

मार्केट में आज कुछ ज्यादा ही शोरगुल मचा है। कुछ देर बाद ही उनको कारण पता चला, आलू से लेकर प्याज तक सभी दोगुना कीमत में बिक रहे हैं। कारण पूछा तो पता चला की 'बिहार' में ट्रक डिलर एसोसिएशन हड़ताल होने के कारण सब्जी की गाड़ी नहीं आ रही है। मछली के बाजार में भी एक ही जैसी हालत है, और इसका कारण है उड़ीसा और

आन्ध्रप्रदेश में आई हुई बाढ़। उनकी पत्नी मिठाई खाना बहुत पसंद करती है इसीलिए मिठाई की दुकान पर गए वहां उनको मिठाईयों के दाम सुनकर छोटा-मोटा दिल का दौरा आते आते बचा जिसका कारण था शादियों का सीज़न। जैसे-तैसे सात दिन की जगह तीन दिन का सामान लेकर बाजार से निकलकर एक रिक्शा को बुलाया तो रिक्शा वाला बोला “बाबू आज से बीस रुपये में नहीं हो पाएगा, तीस में होगा तो चलें” इस बार सेन बाबू ने कारण नहीं पूछा रिक्शा में बैठकर उनको चलने के लिए बोला। चलते चलते सोचा की अगर घुटनों में दर्द न होता तो 30 रुपये बच जाते और उसकी जगह उतने की अच्छी मिठाई सुमित की मां के लिए ले सकते थे। अब शायद सुमित के भेजे हुए पैसों को हाथ लगाना ही पड़ेगा जो इतने सालों से इंकार करते आ रहे थे। ये सब सोचते-सोचते घर के सामने पहुंच गए। घर में आते ही सेन बाबू हमेशा अपनी पत्नी को बाजार से लेकर आई हुई सभी चीजें दिखाते थे लेकिन आज वो कैसे दिखाते। स्निग्धा की सबसे पसंदीदा मिठाई रसगुल्ला उसके लिए नहीं ला पाए, जो रु.10 की बजाए रु. 25 में बिक रहा है। सीधा रसोई में जाकर मिंटी को सामान पकड़ा दिया। जाते-जाते मिंटी बोली कि “इस महीने से सिर्फ रु. 1200 में काम नहीं करूंगी, पड़ोस के राँय बाबू रु. 1500 देने को राजी है, क्या करना है आज ही बता दें?” सेन बाबू बिना सोचे ही एकदम से बोले, “तुम रु. 1500 ही ले लेना बस काम नहीं छोड़ना।” क्योंकि सेन बाबू समझते हैं कि मिंटी जैसी भी हो घर के सब काम पूरे वही करती है और मिंटी नहीं रहेगी तो दोनों बूढ़ा-बूढ़ी को दिन में भी अंधेरा देखना पड़ेगा। घर के अंदर आते ही स्निग्धा ने पूछा “आज बाजार से क्या लाए, दिखाया नहीं हमको?” सेन बाबू ने कुछ जवाब नहीं दिया और खिड़की के पास जाकर खड़े हो गए। आज पहली बार वो अपनी पत्नी से आंख नहीं मिला पा रहे थे। फिर से पीछे से स्निग्धा की आवाज आई, “नंदन केबल का पैसा लेने आया था, हमने बोला अंकल आकर दे जाएंगे। और इसी महीने दोनों की दवाई भी लानी है। भूल गए क्या?” “नहीं भूला”, बस इतनी-सी बात बोलकर निकल गए सेन बाबू।

मण्डल फार्मसी में दोनों के प्रिसक्रिप्शन देकर सेन बाबू नंदन को केबल के पैसे देने के लिए चले गए। रु. 100 के तीन नोट देने पर नंदन बोला की “चाचा, और पचास रुपये निकालो” सेन बाबू ने पूछा की हर महीने तो रु. 285 लेते हो, इस बार क्या हुआ? नंदन जवाब में बोला की “ये नई स्किम आई है इसमें न्यूनतम बेसिक प्लान रु. 350 का है। लेना है तो लो वरना कनेक्सन कटवा लो।” स्निग्धा बेचारी बिस्तर से ज्यादा हिल-डुल नहीं सकती थी, ये टेलीविज़न के कार्यक्रम ही उसका एकमात्र सहारा है जो उसको सुमित का गम भुला के रखता है। सेन बाबू बोले, “नहीं-नहीं ठीक है।” घर आते वक्त मण्डल फार्मसी से दवाई का



बिल देखकर एक दिन में दुसरी बार दिल का दौरा पड़ने को था। जो दवा हर महीने रु. 3400 की मिलती थी उसी दवा पर इस महीने रु. 4250 का बिल कैसे? पूछा तो मण्डल बाबू बोले कि जीएसटी लगने के कारण दवाईयां महंगी आ रही हैं और उसके ऊपर 10% का जो छूट मिलती थी वो भी नहीं मिलेगी। सेन बाबू फार्मसी से एक महीने की बजाए 10 दिनों की दवाई लेकर निकल आए। जाते-जाते सोच रहे थे कि अब शायद वक्त आ गया है कि सुमित के पैसों को हाथ लगा लें अपने लिए न सही स्निग्धा के लिए यह उनको करना ही पड़ेगा। ऐसे में पीछे जोर से हॉर्न मारते-मारते एक बड़ी सी गाड़ी ने आकर ब्रेक लगाया। दिन का तीसरा दिल का दौरा सम्भाल ही लिया था सेन बाबू ने। तभी गाड़ी के अंदर से आवाज आई “अंकल दिखता नहीं है क्या?, मरने के लिए क्या मेरी ही गाड़ी मिली थी? अभी शो-रूम से लेकर आ रहा हूँ। रु. 60 लाख की बीएमडब्लू है ये, आज के अखबार में आया था दो लाख कीमत कम हो गई है देखकर तुरंत खरीद ली। आप की वजह से खरोंच आ जाती मेरी जानेमन पर! चलो अब रास्ते से हट भी जाओ अंकल, जाकर मेरी जानेमन को दोस्तों से भी मिलवाना है।” ब्रुम-ब्रुम की आवाज करके “जानेमन” निकल गई और सेन बाबू को यह सोचने पर मजबूर कर दिया की इस महंगाई के बाजार में किसी का मूल्य घटा वो भी दो लाख रुपये।

सेन बाबू घर आते ही पेन और पेपर लेकर बैठ गए जब उठे तो उनके चेहरे पर लंबी मुस्कान थी। पत्नी ने कारण पूछा तो बोले कि, “आज शाम को गोलगप्पे खिलाने ले चलूंगा, तैयार रहना” सुमित को विदेश भेजने के बाद आज पहली बार साथ में गोलगप्पे खाने जाएंगे। सेन बाबू ने कहीं पर यह सुना था की अगर दिल खुश रहे तो इंसान को दवाई की जरूरत नहीं पड़ती। स्निग्धा को आज कॉलेज के दिनों की तरह पार्क में घुमाएंगे, गोलगप्पे खिलाएंगे, इससे ज्यादा खुशी दुनियां में और कहां मिलेगी? 76 साल में बहुत दुनिया देख ली है सेन बाबू ने, बस आज से उनके लिए महीने की रु. 1670 की दवाई लेना बंद और सुमित के पैसों को भी हाथ नहीं लगाना पड़ेगा ऊपर से इन सब के बाद भी रु. 230 की एक्सट्रा बचत।

—\*X\*—

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता

स्वयं सिद्ध है।

महावीर प्रसाद दविवेदी

## कार्यालयीन गतिविधियां

कार्यालय द्वारा वर्ष 2019 में क्रिकेट टूर्नामेंट (ईस्ट जोनल) का आयोजन कराया गया।



कार्यालय में दिनांक 08/03/2019 को रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया



कार्यालय में महालेखाकार महोदय द्वारा व्यायामशाला (Gym) का उद्घाटन



## हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2019-20 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेसन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		

**"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है  
जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी  
शब्द का बहिष्कार नहीं किया।"**

**डॉ राजेंद्र प्रसाद**





त्रिपुरा के दर्शनीय स्थल नीर महल के सामने “पर्पल हेरोन” की तस्वीर  
माननीय महालेखाकार महोदय ने अपने कैमरे में कैद की।